धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित

हमारी साधना

त्रैमासिक

वर्ष 30 • अंक 2 • अप्रैल-जून 2023

मूल्य रु. 25/-

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।
न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

वर्ष : 30 अप्रैल-जून 2023 अंक : 2

भजन

गुरु जो गुनि जिय घबरायो।
सब विधि हीन दीन जनमन कों तीनि ताप को तायो।
निसिदिन भटकत फिरत जगतु में अब चित अति उकतायो॥
सब उपाय करि हार्‌यों हिय सों कछुँ विश्राम न पायो।
तब पछिताय बिहाय सकल भ्रम तेरी सरन सिधायो॥
भलो बुरो जैसो कछु तेरो तेरेहि नाम बिकायो।
अपने पन की लाज राखि अब मों कहँ हिये लगायो॥
रामसरन करि रह्यो चिरौरी मम अवगुन बिसरायो।
उर धरि दया जानि जन आपन करि कछु जतन निभायो॥

भजन संख्या 6 - स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'

प्रकाशक
साधना परिवार
स्वामी रामानन्द साधना धाम,
संन्यास रोड, कनखल,
हरिद्वार-249408
फोनः 01334-311821
मोबाइलः 08273494285

सम्पादिका
श्रीमती रमना सेखड़ी
995, शिवाजी स्ट्रीट,
आर्य समाज रोड
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
मोबाइलः 09711499298

उप-सम्पादक
श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
1018, महागुन मैंशन-1,
इन्दिरापुरम,
गाजियाबाद-201014
ई-मेलः rcgupta1018@gmail.com
मोबाइलः 09818385001

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	रचयिता	पृ.सं.
1.	चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2.	भजन	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3.	सम्पादकीय		5
4.	निर्वाण दिवस-2023 के अवसर पर साधकों द्वारा गुरुदेव के प्रति अर्पित की गई श्रद्धांजलियाँ		6-7
5.	भजन		8
6.	गीता विमर्श – श्रीमद्भगवद्गीता पंचमोऽध्याय (गतांक से आगे)	स्वामी रामानन्द जी	9-12
7.	गुरु वाणी		13
8.	Letters to Seekers — Letter No. 9 and 10		14-16
9.	सरदारनी विद्यावती जी के सौजन्य से प्राप्त गुरु महाराज के हस्तलिखित पत्र की छायाप्रति		17
10.	भागवत के मोती		18
11.	साधन सम्मिश्रण	रमना सेखड़ी	19-22
12.	स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचार	संकलनकर्त्री रेवा भाम्बरी	22
13.	पूज्य साहू जी का जीवन चरित्र - तृतीय भाग	अनिल चन्द्र मित्तल	23-25
14.	कार्यकारिणी समिति की बैठक का विवरण		26-27
15.	आम सभा की बैठक की कार्यवाही		27
16.	दिगोली तपस्थली शिविर-2023 (11 से 15 मार्च 2023) – विवरण		28-30
17.	मैं 'मैं' हूँ	संकलित	30
18.	श्री गुरुदेव निर्वाण-दिवस साधना शिविर-2023 (14 से 21 अप्रैल 2023) – विवरण एवं प्रवचन सार		31-38
19.	दानदाताओं की सूची		39-40
20.	शुभ समाचार		41
21.	शोक समाचार		41
22.	बाल-साधना-शिविर-2023 (7 से 11 जून 2023 तक) – सूचना		42
23.	श्री गुरु पूर्णिमा साधना शिविर-2023 (28 जून से 3 जुलाई 2023 तक) – सूचना		42
24.	श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		43
25.	चित्र – दिगोली तपस्थली शिविर-2023 (11 से 15 मार्च 2023)		44

Printed and Published by Shri Dinesh Bahl for and on behalf of Swami Ramanand Sadhna Pariwar, Sadhna Dham, Sanyasa Road, KANKHAL-Haridwar (Uttarakhand) and printed at Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area Phase-I, New Delhi-110020.

सम्पादकीय

सभी साधक भाई-बहनों को सम्पादक-मण्डल का प्रेम भरा राम-राम, अभिनन्दन!

इस तिमाही की शुरुआत गुरु महाराज के निर्वाण दिवस के शिविर से होती है। इस बार भी दिनांक 15 अप्रैल को साधना धाम के गंगा घाट पर लगभग 60 साधक भाई-बहनों ने सामूहिक रूप से गुरु महाराज को सूक्ष्म में विराजित जानकर पुष्पांजलि अर्पित की। उसके पश्चात् शिविर की पूरी अवधि में प्रबुद्ध साधकों ने अपने-अपने शब्दों में, किसी ने गद्य में तो किसी ने पद्य में, भाव-विभोर होकर श्री गुरु महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की जिनका सारांश पत्रिका में देखने को मिलेगा। क्यों न हो, जिन गुरु महाराज की अनुकम्पा से हम इतने विशाल भवन में बैठकर साधना करने की स्थिति में हैं, उनका आभारी तो होना ही है। इस सम्बन्ध में आदि गुरु शंकराचार्य ने कहा है –

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं॥

अर्थात् जिस व्यक्ति का शरीर सुन्दर हो, पत्नी भी खूबसूरत हो, कीर्ति का चारों दिशाओं में विस्तार हो, मेरु पर्वत के समान अनन्त धन हो, परन्तु गुरु के चरणों में यदि मन की लगन न हो तो इन सभी उपलब्धियों का कोई महत्त्व नहीं होता है।

इससे पूर्व की तिमाही में दिगोली तपस्थली में शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें साधकों की अभूतपूर्व उपस्थिति दर्ज़ की गई जो हमारे अध्यक्ष महोदय के अथक प्रयासों से भवन के विस्तारीकरण के कारण सम्भव हो पाया। इसका विस्तृत वर्णन भी पाठकों को इस अंक में पढ़ने को मिलेगा।

गीता विमर्श, गुरु वाणी व अंग्रेजी में Letters to Seekers के अतिरिक्त इस पत्रिका से 'भागवत के मोती' शीर्षक से एक नया स्थायी स्तम्भ आरम्भ किया जा रहा है जो साधकों में ज्ञान व भक्ति की वृद्धि करने में सहायक होगा, ऐसी आशा है।

साधना धाम में होने वाले आगामी कार्यक्रमों की सूचना, दानदाताओं की सूची, साधकों से सम्बन्धित शुभ व अशुभ समाचार तो पत्रिका में होते ही हैं। इन सबके अतिरिक्त पाठकों के सुझाव सदैव ही आमन्त्रित हैं जो e-mail या WhatsApp द्वारा सम्पादक अथवा उप-सम्पादक को प्रेषित किये जा सकते हैं।

पाठकों से नम्र निवेदन है कि पत्रिका के सम्पादन में जो त्रुटियाँ रह गई हों उनको क्षमा करते हुए सुधार के लिये सुझाव व अपनी मौलिक कृतियाँ (लेख, कवितायें व भजन) प्रेषित करते रहें।

पत्रिका के लिये भजन, लेख आदि रचनाएँ मौलिक (स्वरचित) हों तो उत्तम है। यदि कहीं से लिये गये हैं तो संकलनकर्ता लिखकर अपना नाम लिखें। लेख आदि पूज्य गुरुदेव की साधना पद्धति से मेल खाते हुए होने चाहिए।

आगामी अंकों के लिये साधकगण कृपया अपने भजन, कवितायें व लेख इत्यादि, डाक द्वारा पत्रिका की सम्पादिका अथवा उप-सम्पादक के पते पर; WhatsApp के माध्यम से उनके मोबाइल 09711499298 या 09818385001 पर; अथवा उनके ई-मेल info.sadhnaparivar@gmail.com या rcgupta1018@gmail.com पर प्रेषित करें।

निर्वाण दिवस-2023 के अवसर पर साधकों द्वारा गुरुदेव के प्रति अर्पित की गई श्रद्धांजलियाँ

जीवन के आधार प्रभु मेरे
अब कृपा करो मेरे स्वामी जी।
न छोड़ें तेरा द्वार कभी
अब कृपा करो मेरे स्वामी जी।

श्रद्धांजलि स्वीकार करो प्रभु
पुष्पांजलि चरणों में हो।
अश्रुकण में वन्दना हो मेरी
राम लय कण-कण में हो।

मुझको तो बस ऐसा वर दो
कोई अवगुण न रहने पाये।
मन में ऐसा अमृत भर दो
शरण में रख लो स्वामी जी।

यह जीवन है आना-जाना
आज यहाँ कल कहाँ रहेगा।
बनजारा जब चल देगा तो
ठाठ कहीं भी नहीं रहेगा।

मेरा तेरा क्या है जग में
जो कुछ भी है सब तेरा है।
तेरा हूँ मैं सौंप तुझे तो
कुछ भी लगे नहीं मेरा है।

– मीरा दुबे कानपुर

गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः
तुम्हरी महिमा है अपार महा।
हम प्यारे प्रभु के बच्चे हैं,
पर सोच समझ के कच्चे हैं,
हम सब को राह दिखाने को,
प्रभु ने भेजा है तुम्हें यहाँ।

जब छूटे सभी सहारे थे,
हम कोशिश करके हारे थे,
तुम ही बने हमारे थे,
बन राम दूत तुम पहुँच गए,
था बालक तेरा खड़ा जहाँ।

तुम कुशल प्रशिक्षक लगते हो,
करुणा के भण्डार गुरु,
तुम प्रबल की धार गुरु,
तुम हो मेरे आधार गुरु।

हो धरती पर अवतार गुरु,
है तेरी कृपा अपार गुरु,
जीवन का समझा सार गुरु,
है तेरा ही उपकार गुरु।

जब तुम हो खेवनहार गुरु,
तो नैया समझो पार गुरु,
तुम हो मेरे आधार गुरु,
मैं कैसे करूँ आभार गुरु।

तुमने जब मुझको थाम लिया,
कुछ और चाहिये मुझे कहाँ,
फिर क्यूँ मैं भटकूँ यहाँ वहाँ,
जब मुझे कष्ट में पाते हो,
तुम दौड़े-दौड़े आते हो।

फिर रिश्ते सभी निभाते हो,
तुम मेरे दिल को भाते हो,
इस छवि से मुझे लुभाते हो,
शिशु सिमटा तेरी गोदी में,
है सरल स्नेह में रहा नहा।

– शिव कुमार जायसवाल

निर्वाण दिवस 2023 के अवसर पर साधकों द्वारा गुरुदेव के प्रति अर्पित की गई श्रद्धांजलियाँ

गुरु जी हमारे हम हैं तुम्हारे
श्रद्धा सुमन लिये तेरे ही सहारे
सत्संग का दान दे दो
सुमिरन अधार दे दो
समता की दृष्टि कर दो
स्वामी हमारे। गुरु जी.....
नाम का प्रवाह कर दो
ज्ञान का प्रकाश भर दो
निष्ठा निष्काम कर दो
मोहन हमारे। गुरु जी.....
सेवा का भाव भर दो
प्रेम की खान कर दो
भक्ति अविराम दे दो
गुरुवर हमारे। गुरु जी.....

– सुशीला जायसवाल

हृदय कुंज में कोयल कूक करे
सत चित आनन्द के सागर हो
मन मन्दिर में गुरुदेव बसें
हम सब के ज्ञान प्रकाशक हो
हम सब मिलकर पुकार करें
तुम श्वास श्वास में व्यापक हो
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
उद्‌गार ये गुरुवर मेरा है
तेरी किरपा का भान मुझे
मैं तेरा हूँ तू मेरा है
हर पल रहता गुरुदेव मेरे
अर्पित यह जीवन चरणों में
श्रद्धा के पुष्प समर्पित हैं
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।
गुरुदेव नमः गुरुदेव नमः।

– कुसुम माहेश्वरी

शत शत बार नमन करती हूँ शत शत बार वन्दना है।
श्रद्धा सुमन समर्पित गुरुवर बारम्बार प्रणाम है।
द्वार आपके आई हूँ भावों की माला लाई हूँ।
मैं तुम्हें रिझाने आई हूँ पुष्पांजलि चढ़ाने आई हूँ।
मिलता है सच्चा सुख केवल गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
शत शत बार नमन करती हूँ शत शत बार वन्दना है।
शरण हुआ अमृत रस पाया गुरुदेव तुम्हारे चरणों में।
कल्याण खज़ाना भरा हुआ गुरुदेव तुम्हारे वचनों में।
हे सद्‌गुरु तुम परम प्रकाशक तुमसे ही कल्याण हमारा।
तुमको पाकर धन्य हुआ यह मानव का जीवन सारा।
शत शत बार नमन है गुरुवर शत शत बार वन्दना है।

– कुसुम सिंह

सद्‌गुरु को परिभाषित कर दूँ, मैं इतना अभिजात नहीं।
मेरे जीवन में तो कुछ भी, सद्‌गुरु सम सौगात नहीं।
परम ब्रह्म के एक मात्र, प्रतिरूप हमारे सद्‌गुरु हैं।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, और विधाता सद्‌गुरु हैं।
विषम विषाद-ग्रस्त होता जब, आकुल व्याकुल मेरा मन।
सद्‌गुरु के आशीष वचन से जीवन होता संजीवन।
प्रातः उठकर गुरु चरणों की, प्रथम वन्दना हम करते।
समय सारणी के अन्तर्गत, दिवस विघ्न सारे हरते।
सद्‌गुरु को परिभाषित कर दूँ, मैं इतना अभिजात नहीं।
मेरे जीवन में तो कुछ भी, सद्‌गुरु सम सौगात नहीं।

मूल रचयिता **श्री योगेन्द्र नाथ द्विवेदी**
संकलन कर्ता **सुधीर अवस्थी**

भजन

हे सतगुरु मेरे दाता प्रभु राम मेरे दाता,
इक बार तो आ जाओ इक बार तो आ जाओ।
नैया डगमग डोले और खाए हिचकोले,
पतवार संभालो प्रभु इक बार तो आ जाओ।
मैं दीन भिखारी हूँ इक तेरा सहारा है,
यही आस मेरे गुरुजी इक बार तो आ जाओ।
तेरे नाम के सुमिरन से भव बन्धन कट जाए,
तेरी कृपा प्रसाद मिले इक बार तो आ जाओ।
जन्मों की प्यासी हूँ अब शरण तिहारी हूँ,
तेरे चरणों का प्यार मिले इक बार तो आ जाओ।
हे सतगुरु मेरे दाता प्रभु राम मेरे दाता,
इक बार तो आ जाओ इक बार तो आ जाओ।

❖ ❖ ❖

दिल की हर धड़कन में प्रभु आप ही बस जाओ,
मैं द्वार पड़ी तेरे मेरे मन में समा जाओ।
इक तेरे सिवा भगवन् कोई और ना दूजा है,
किसका मैं ध्यान करूँ कोई और नहीं भगवन्।
नयनों में आन बसो प्रभु करुणा सागर हो,
तेरा नाम सुमर कर मैं तुममें ही खो जाऊँ।
दीनबन्धु कहाते हो प्रभु दया के सागर हो,
मझधार पड़ी नैया प्रभु पार लगा जाओ।
दिल की हर धड़कन में प्रभु आप ही बस जाओ,
मैं द्वार पड़ी तेरे मेरे मन में समा जाओ।

❖ ❖ ❖

हे ज्ञानवान भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो।
करुणा के चार छींटे करुणा निधान दे दो।।
सुलझा सकें हम अपने जीवन की उलझनों को।
प्रज्ञा ऋतम्भरा सी बुद्धि का दान दे दो।।
अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सकें हम।
इन बाजुओं में शक्ति हे शक्तिमान दे दो।।
उपकार भावना से निर्भीक सत्य वाणी।
मीठे ही शब्द बोलें ऐसी जुबान दे दो।।
दाता तुम्हारे घर में किस चीज की कमी है।
चाहो तो निर्धनों को दौलत की खान दे दो।।
तुम देवता हो सबकी बिगड़ी बनाने वाले।
जीवन सफल हो मेरा बस ऐसा ज्ञान दे दो।।
डर है न भटक जाएँ मारग बड़ा विषम है।
भक्तों की मण्डली में हमको भी स्थान दे दो।।
हे ज्ञानवान भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो।।

– श्री किशन अरोड़ा
ज्ञानोदय, इन्दिरापुरम्, गाजियाबाद

गीता विमर्श

श्रीमद्भगवद्गीता पंचमोऽध्याय

(गतांक से आगे)

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥17॥

'ज्ञान के द्वारा जिनके पाप धुल गये हैं, जिनकी बुद्धि प्रभु में लगी है, उसी में आत्मा है जिनकी, उसी की निष्ठा वाले और उसी के परायण हुए जन्म-मरण से रहित हो जाते हैं'।।17।।

उस प्रकाश का, उस प्रभु-दर्शन का, उस भगवती-चेतना की अनुभूति का परिणाम क्या होता है? व्यक्ति की बुद्धि प्रभु में निवास करने लगती है। यही चेतना व्याप्त हो जाती है बुद्धि में। वह स्मृति सतत हो जाती है। सभी मानसिक-क्रियाओं की वह पृष्ठभूमिका बन जाती है और वृत्तियाँ जगती और तिरोहित होती हैं, परन्तु वह समानरूप से बनी रहती है। जिस जागृति का यह सहज परिणाम नहीं, वह उत्तम चेतना की सम्यक् जागृति नहीं है। वह साधना-क्रम में परिपाक नहीं है अभी। वह उत्तम अवस्था है जिसमें चेष्टा के बिना सौम्य-स्मृति होती है – नहीं; विकास होता है बुद्धि का उसमें।

इतना ही नहीं, 'तादात्म्य' हो जाता है व्यक्ति। हमारा आत्मभाव उसी में रहता है। उसमें निवास करने लगते हैं। अतः आन्तरिक-जगत् में उससे कभी अलग होने की प्रतीति ही नहीं होती। जुड़ से गये हों हम सदा-सदा के लिए, ऐसी अनुभूति रात्रि-दिवस बनी रहती है। परन्तु, यह शान्त और सम अनुभूति होती है। यह वाणी का विषय नहीं है, अनुभवगम्य ही है। हम उसमें रहते हैं और वह हममें रहता है। 'मैं तू और तू मैं' हो जाते हैं।

'तन्निष्ठा' उसमें निष्ठा हो जाती है – विश्वास, श्रद्धा, आस्था। जो जीवन की गति ही बन जाये, वह निष्ठा होती है। हम उसे ही चाहते हैं उसे ही रिझाते हैं, उसी के लिये जीते और उसी के लिये कर्म करते हैं। जीवन की गतिविधि, सर्वस्व, जीवन, प्राण वही हो जाता है। उसके सिवाय किसी के लिये स्थान नहीं रहता। सभी नाते, सभी आकांक्षायें, सभी कर्त्तव्य सभी दुलार, उसी एक में डूब जाते हैं। उस सांवरे को देखकर यह पागलपन जग जाना स्वाभाविक है। गोपियों की प्रभुनिष्ठा में यही अनन्यता होती है। वही हमारे जीवन का एकमात्र लक्ष्य हो जाता है।

'तत्परायणाः' – उसके परायण हुए। ऐसे परमाश्रय को पाकर व्यक्ति और किस घर को ढूँढेगा? अयन घर को कहते हैं। वह हमारा पक्का घर बन जाता है। उससे परे कोई आश्रय नहीं रहता और उसके परे भी कोई आश्रय नहीं रहता। सभी आश्रयों का वही आश्रय दिखाई पड़ने लगता है। हमारे लिये दाताओं का वह दाता बन जाता है। सेवकों की वह बांह दीखता है, दयालु की वह दया होती है और पथप्रदर्शक की वह बाज़ी। उसके बिना और ठौर कहाँ है।

जाऊँ कहां तजि चरण तिहारे?

इस प्रकार कह उठता है उसका हृदय।

जब ऐसे परमपिता का आश्रय मिला है तो फिर अपनी सोच क्यों कर? निर्भर होने का प्रमाण है निश्चिन्तता। पूरी निर्भरता, पूरी परायणता तो सर्वथा लौकिक, पारलौकिक निश्चिन्तता है। जो परायण होकर भी अपने भविष्य के लिये या किसी दूसरे के भविष्य के लिये चिन्तित है, उसने अभी इस परायणता के तत्त्व को पाया नहीं। इस तत्परायणता के मद से मस्ताना हुआ भक्त विचरता है इस भूतल पर।

और अन्त में कहा – **'ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः'।**

कल्मष – पाप होता है। ज्ञान भलीभाँति धो देता है इसको। संस्कार का लेश नहीं रहता। बच्चे की तरह निस्पर्श-अछूते पवित्र हो जाते हैं। ज्ञान दग्ध कर देता है सभी संस्कारों को। कालिमा तो पुण्य की भी होती

है। वह भी धब्बा होता है। सन्त तो आर-पार दर्शी हो जाते हैं, शीशे की भाँति। ज्ञान कर देता है उनको इस प्रकार का – वही ज्ञान जिसके उपरान्त प्रभु की प्रतीति जगती है।

'भला निर्मल हुए बिना प्रभु के तत्व को पाया जा सकता है? उसमें प्रवेश पाया जा सकता है कहीं?' उसमें समाने से पहिले अपने सारे संस्कारों की पोटली रख देनी होगी। उसमें तो अवस्त्र होकर ही घुसा जाता है। ऐसे होकर जाया जाता है कि हम जगह न घेरें – अछूते रहें। ज्ञान से यह सभी कुछ होता है।

वह बुलाता है तो ज्ञान भी देता है। ज्ञान कहीं किसी और ठौर से प्राप्त नहीं होता। वह निर्मल करके अपने में ले लेता है।

ऐसे सन्तों की क्या गति होती है? वे लौटकर यहाँ नहीं आते। जन्म-मरण से रहित जो मार्ग है, उस पर वे चले जाते हैं। वे जाते हैं तो फिर लौटने के लिये नहीं; जैसे सामान्य लोग जाते हैं वैसे नहीं। प्रभुदर्शन से जन्म-मरण तो समाप्त हो ही जाता है, इसमें क्या सन्देह।

कैसी स्पष्ट भाषा में सन्तपद का वर्णन किया गया है? वास्तव में उसकी कृपा ही ऐसा रंग सकती है। वह झलक देता है और अपनी ओर बांध लेता है। वह झलक तो चली जाती है, उसका आश्वासन रह जाता है और रह जाती है फड़फड़ाहट उसे पाने के लिये। अभी भीतर निम्न प्रकृति का प्राबल्य होता है। अब वह साधना करता है और तड़फता भी है उसी के लिए। निर्मल होता जाता है, आँखें खुलती जाती हैं, विज्ञान तथा ज्ञान का क्षेत्र खुलता जाता है। फिर आती है उसकी झलक। नूतन अवलम्बन मिलता है, नूतन शान्ति, स्थिरता और आनन्द मिलता है। व्यक्ति आत्मदान के पथ पर अग्रसर होता है। क्रमशः उसकी प्रतीति सततवाहिनी हो जाती है। चलते-चलते पूर्व प्रवेश की अनुभूति होती है। यह है हमारे साधन-पथ का सिलसिला।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥18॥

'पण्डित लोग, विद्या और विनय से युक्त ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल के विषय में समदृष्टि वाले होते हैं'॥18॥

कौन है यह पण्डित? जिसकी चर्चा ऊपर हो रही है, वही जो संसार बन्धन से मुक्त हुआ विशुद्ध सन्त है। उसी के विषय में यह कथन है।

पण्डित – जिसके भीतर विशेष समझ (पण्डा) जगी हुई हो। अधिक जानकारी से व्यक्ति पण्डित नहीं होता। समझने की योग्यता से और पैदा हुई समझ से पण्डित होता है। अपठित भी तो सन्त हुए हैं। मध्ययुग के सन्तों ने तो पोथी की विद्या को प्रायः लाभ नहीं किया था। श्रीराम-कृष्ण परमहंस भी तो प्रायः अपठित ही थे। कोई-कोई सन्त तो इस पोथी-ज्ञान को वास्तव में प्रभु के पथ का बाधक ही समझते हैं। जहाँ तक यह अभिमान को पुष्ट करता है और मति को उलझाता है, वहाँ तक तो यह सत्य ही है इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु, सर्वत्र ऐसा ही प्रभाव नहीं होता है इसका।

सन्तों की दृष्टि सम होती है। सम का अर्थ है बराबर। उन्हें ऊँचा-नीचा नहीं दीखता। उन्हें कोई आदर तथा तिरस्कार का पात्र नहीं दीखता। क्या वस्तुओं और व्यक्तियों की विशेषताएँ दीखनी बन्द हो जाती हैं प्रभुपद में प्रतिष्ठित होने पर? क्या भेदज्ञान ही निर्मूल हो जाता है? वास्तव में समदृष्टि अंधापन नहीं है। वह तो सभी तस्वीर को समग्र रूप से देखना है। 'सभी उसमें हैं, उससे हैं और उसी की ओर बढ़े चले जा रहे हैं। वही वास्तव में विभिन्न रूपों में लीला करता है – यह देखना है। जब हम हर रूप में, रंग में, क्रिया के गुण तथा दोष में उसी को पहिचान लेते हैं, तब हम सभी कुछ देखते हुए भी सभी के प्रति सम रहते हैं। गुण-दोष तो उसी एक की अगणनीय स्थितियाँ मात्र प्रतीत होती हैं। हम उसे ही पहिचानते हैं और उसी से बरतते हैं। भीतर समता होती है। हम सभी को समानरूप से स्वीकार करने लगते हैं। वैर-विरोध के लिए, राग-द्वेष के लिये कोई गुंजाइश ही नहीं रहती। वास्तव में जब तक व्यक्ति के हृदय में राग-द्वेष रहता

है वह उस सम को, जो समानरूप से सबके भीतर छिपा है, बैठा है, लीलामय है, उसे पहिचान ही नहीं पाता। ये राग-द्वेष ही हैं जो वैषम्य को रचते हैं और उस 'सम' को आँखों से ओझल कर देते हैं।

वह परमतत्त्व सम है। सभी में समान रूप से है, जैसे आकाश तथा वायु है। वह सम है और जगह नहीं लेता है। इसीलिये सभी उसमें हैं और वह कम नहीं होता। वह कुछ मांग नहीं करता, इसलिये उसमें और उससे विषमता नहीं आती, परमतत्त्व की समता का बोध ही समत्व की दृष्टि प्रदान कर सकता है। उसे पहिचान कर ही, उस परमतत्त्व में जग कर ही तो व्यक्ति सम हो सकता है वास्तव में सबके प्रति।

यह समदृष्टि बौद्धिक नहीं है। बौद्धिक-समता वास्तविकता का निराकरण है और जीवन का हनन है। वैषम्य सृष्टि का नियम है। गुण-वैषम्य से ही तो सृष्टि है। गुणसाम्य तो प्रलय होता है। प्रकृति में नितान्त समता तो ढूँढ़े नहीं मिलती। गेहूँ के दो दाने भी तो बिल्कुल समान नहीं होते। अतः समता बौद्धिक-जगत् में सम्भव नहीं। इस वैषम्य के परे, इसके मूल में है अध्यात्म की समता। वह जो समानरूप से सबका अवलम्बन है, वह सम है। बिल्कुल सर्वथा सम है। सन्त की दृष्टि तो सर्वदा उसी पर केन्द्रित रहती है। विषमता तो पीछे पड़ जाती है, गौण हो जाती है, नगण्य हो जाती है। यह ब्राह्मण है अथवा चाण्डाल है, यह प्रश्न ही नहीं होता। वह भगवान् है इस रूप में या उस रूप में, यह बोध होता है। 'वासुदेवः सर्वमिति' – वासुदेव ही सब कुछ है – यह भान हुआ तो कैसा ब्राह्मण और कैसा चाण्डाल?
भगवान् ही भगवान् रह जाता है। यह समता अतिमानुषी-स्तर में आती है।

लोगों से कैसे बरतेगा ऐसा सन्त? सौम्यरूप से, सम-रूप से। **'सर्वभूतहिते रताः'** होता है सन्त। वह भूतमात्र के कल्याण में लगा होता है। यह है व्यवहार का पैमाना। उसके समत्व-बोध का आधार बाह्य व्यवहार नहीं। उसमें जगी हुई समत्व की चेतना आधार है। व्यवहार में वह समत्व बौद्धिक पैमाने को लेकर नहीं आता। जैसा व्यवहार जिसके लिये श्रेयस्कर होगा, उस समय वैसा ही उसके लिये होगा। जिस समय जैसा उचित होगा, उस समय वैसा ही बरतेगा। कभी वह आदर देगा, प्यार देगा और कभी दूर रखेगा। किसी को बहुत नजदीक बुलायेगा और किसी को दूर रखेगा।

जो लोग अपनी बौद्धिक-समता के पैमाने पर सन्त के व्यवहार को कसते हैं वे अध्यात्म को नहीं जानते, वे इस समता के रहस्य को नहीं समझते। जैसे वह सम-तत्त्व पुरुषोत्तम इतने महान् वैषम्य द्वारा प्रकट होता है, ऐसे ही सन्त की समदृष्टि व्यवहार के वैषम्य के द्वारा प्रकट हो सकती है, होती है। उसी में कल्याण है, सजीवता है, स्वामित्व है और अलौकिकता होती है। यह एक कसौटी है, उसके भीतर से सारा व्यवहार करते हुए भी समता का लोप नहीं होता, राग द्वेष का उदय नहीं होता, काम-क्रोध का आविर्भाव नहीं होता। यदि वह कुछ हो जाता है तो अभी सन्त पद की प्राप्ति दूर है।

पाशविक-स्तर से नाम लेकर स्पष्ट करते हैं समता को। गाय, हाथी तथा कुत्ते में समदर्शी होते हैं। गाय पवित्र है, पूज्य है माँ के स्थान पर है। हाथी उपयोगी जानवर है, परन्तु कोई पवित्रता-अपवित्रता के भाव उसके साथ नहीं लगे हैं। कुत्ता अपवित्र समझा जाता है। सन्त के लिये तीनों बराबर हैं। जब हमारा किसी प्रकार स्वार्थ साधन शेष नहीं रहता तो भी दूसरे सम हो जाते हैं हमारे लिए। लौकिक अथवा पारलौकिक स्वार्थ-सिद्धि की कामना भी तो विषमता का कारण होती है।

सन्त तो समान रूप से तीनों में ही प्रभु को देखता है। तीनों में ही उसको नमस्कार कर सकता है। तीनों से प्यार कर सकता है।

और व्यवहार? क्या तीनों को एक सा और एक बराबर खाना देगा सन्त? कदापि नहीं। वैसा करना भीतर बैठे प्रभु का तिरस्कार करना होगा। जैसी काया

है वैसी ही उसकी आवश्यकताएं होनी स्वाभाविक हैं। समता का अर्थ है उनको ठीक-ठीक पूरा करना। गाय को उसकी आवश्यकतानुसार भोजन, स्थान और प्यार, और हाथी को उसके अनुकूल, कुत्ते को कुत्ते के लायक।

इसका अर्थ है –सन्त सम होता है भीतर, व्यवहार-कुशल होता है बाहर, वह मूर्ख नहीं होता। औरों से अधिक समझता है मनुष्यों और जानवरों को। तभी तो हित कर सकता है दूसरों का। तभी तो उसका अनुशासन चलता है बिना चाहे ही। ब्राह्मण के साथ विशेषण लगा है 'विद्या और विनय से सम्पन्न'। चाण्डाल और ऐसे ब्राह्मण में लौकिक दृष्टि से कितना अधिक भेद होता है इसे जताने के लिए, बाह्य वैषम्य पर ज़ोर दिया गया है।

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥19॥

'जिनका मन समता में स्थित है, उन्होंने यहीं पर (इस लोक में ही) जन्म-मरण को जीत लिया है। निश्चय ही ब्रह्म दोषरहित और सम है। अतः वे ब्रह्म में स्थित हैं'।।19।।

ऐसे आन्तरिक साम्य को प्राप्त कर लेने वाले व्यक्तियों के विषय में कहते हैं – 'उन्होंने यहीं जन्म-मरण को जीत लिया है'। यहीं पर – जीते जी ही, इस देह में रहते हुए ही, इसी लोक में, भूलोक में निवास करते- करते वे जीवनमुक्त हैं, उन के बन्धन कट चुके हैं। जिनके कुछ संस्कार अभी शेष हैं, वे शरीर छोड़ने पर ही बन्धन से मुक्ति अनुभव करते हैं। परन्तु जिनके सभी संस्कार दग्ध हो चुके हैं वे जीते ही मुक्त हो जाते हैं।

जैसा कि पीछे भी कहा है बिना राग-द्वेष से नितान्त मुक्त हुए नितान्त साम्य नहीं होता। बिना संस्कारों के पूरी तरह समाप्त हुए, राग-द्वेष से नितान्त मुक्ति कहां? जो धुल गया है, बन्धन-रहित हो गया है, वही इस साम्य को लाभ करता है। यह वही साम्य है जिसका रूप है **'वासुदेवः सर्वमिति'**। उसके लिये ही तो कहा है 'अनेक जन्मों की साधना के उपरान्त मुझे पाता है'।

जो बुद्धि की समता है, स्थितप्रज्ञ की, और यह जो साम्य है, उनमें यह साम्य बहुत बड़ा है। वह स्थिरता तो संयम पर आश्रित है और यह समता उस समतत्व की अनुभूति पर स्थित है। उसमें तनाव है, पतन का भय है। इसमें सौम्यता है और निर्भयता है। वह मुक्ति का मार्ग है और यह साक्षात् जीवन्मुक्ति है। यह तो पूरा-पूरा भगवान् में ही निवास है।

ब्रह्म निर्दोष है और सम है। ब्रह्म है परमतत्व, वही जो पुरुषोत्तम है। वह दोषरहित है, विकाररहित है। राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहमादि दोष हैं। इन्हीं के कारण विषमता होती है। भीतर विषम होता है। बाह्य जगत् में उस विषमता का प्रतिबिम्ब पड़ता है, वह भी विषम हो जाता है। कोई प्रिय कोई अप्रिय हो जाता है, कोई ऊँचा और कोई नीचा हो जाता है। भगवान् तो इन दोषों से रहित हैं और वे सम हैं। इन दोषों के अभाव में ही समता सम्भव है। ब्रह्म सम है –

'समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः' (9/29)

'मैं सभी भूतों के प्रति सम हूँ। न मेरे लिये कोई द्वेष के योग्य है और न प्यार के योग्य है। अर्थात् राग तथा द्वेष किसी के लिये भी नहीं।

विषमता हो तो भगवान् भगवान् नहीं रहता, शैतान बन जाता है। वह मानुषी-स्तर पर उतर आता है। वह सम है इसीलिये सभी का है और सब कोई उसके हैं। वह सम है तभी तो सभी का उत्पत्ति स्थल है और सबका आधार है। वह सम है तभी तो सब को स्थान दिये है। भगवान् को सम कहा जाए, इस नाम से पुकारा जाय, तो उचित ही होगा।

क्योंकि प्रभु सम है, जो समत्व की चेतना को लाभ किये है, वह उस सम में स्थित है, भगवान् में ही स्थित है। वे तो उसी में ही रहते हैं। वे तो जीवन्मुक्त हैं ही। उन्हें बन्धन कैसा? भगवान् में रहकर बन्धन की सम्भावना ही नहीं रहती।

(क्रमशः)

गुरु वाणी

नाम-स्मरण से, भगवान् चिन्तन से, सत्य तथा दृढ़ संकल्प से, हमारा **aura** ऐसा हो जाता है कि बुरे संस्कार इसको बेध ही नहीं सकते। (पत्र 51)

❖ ❖ ❖

अपने को सरल कर दो, ठीक बालकवत्। माता के हाथ अधिकाधिक प्रतीत होने लगेंगे। (पत्र 51)

❖ ❖ ❖

जब तक हममें सांसारिक कृत्यों से भागने की वृत्ति शान्त नहीं होती, जब तक हम उनको झंझट मानते हैं, ईश्वरीय पूजन नहीं मानते, तब तक यह तूफान हमें व्याकुल करेंगे। ज्योंही यह समझ लिया कि यह सब उसका कृत्य है, लीला है, उसी में मैं भी योग दे रहा हूँ, यह शान्त हो जायेंगे। (पत्र 52)

❖ ❖ ❖

हमारी दृष्टि पूर्णतया सीमित रहती है, हमें उससे ऊपर उठना असम्भव हो जाता है। अतः दूसरे की बातें भी समझ में नहीं आतीं। जो व्यक्ति अपने विचारों तथा बुद्धि की आसक्तियों को एकदम छोड़ने के लिये तैय्यार रहता है, जिसमें विशाल सहानुभूति होती है, दूसरे को समझने की इच्छा भी होती है, वही दूसरों की बातों को समझ सकता है और उनको प्रभावित कर सकता है और स्वयं प्रभावित हो सकता है। यह लचकीलापन आगे बढ़ने के लिये अनिवार्य प्रतीत होता है। इसके साथ ही साथ दृढ़ता की भी आवश्यकता है। इसके अभाव में व्यक्ति बिलकुल बेकार का होता है। (पत्र 56)

❖ ❖ ❖

भगवती शक्ति जिस पर भली प्रकार से अवतरित हो जाती है वह उसका परित्याग नहीं करती। भिन्न-भिन्न अवस्थायें संस्कारों को क्षीण करने मात्र के लिये होती हैं। (पत्र 57)

❖ ❖ ❖

पूर्णत्व तो पल भर में प्राप्त होने वाली वस्तु है ही नहीं, समय लगता है और कई उतार चढ़ाव स्वभाविक ही हैं। (पत्र 57)

❖ ❖ ❖

Letters to Seekers

Letter No. 9 : Shri Ram : Shri Sadan, Almora.

03.08.1944

My dear .....,

Yours of the 31st to hand. Hope you received my notes in time. I wrote down the notes inspite of the fact that Akhanda Ramayanotsava was going on in my charge at the moment.

So your views have gradually undergone a change. Now that you see the road ahead of you clearly you are to direct your energies neither in speculation on the philosophy nor in convincing others. Conservation of energy and its right employment – these two are the conditions of speedy success. Put your whole self in translating the philosophy into an effort of Sadhna. Do not scatter it away by discussing and trying to convince others. As soon as you begin to have conviction from within, your words carry much greater weight. Then you will be able to convince without arguing.

For the present, it is to be recognised that Faith in the Lord, and His Grace (Mahashakti) is the bedrock of this Sadhna. The Lord is शक्तिमय (Shaktimaya), ज्ञानमय (Gyanmaya), आनन्दमय (Anandmaya), His विधान (Vidhan) is the best for the evolution of a particular soul. So surrender to His Will. Do not try to run away from the surroundings in which you are placed, but try to learn the lesson for which you are placed there. When change is necessary, it will come.

Secondly, do not fight your lower nature, and neither follow it. Stand apart – watch the emotions arise. Regard them as things destined to pass away gradually for ever. Have faith that the Lord's Grace is on you because you aspire to be His, and that His Grace (His Mahashakti) will gradually clear away the dross. Be not disturbed if the suppressed sanskars of the worst kind come to the forefront. They are foreign-matter; before passing away it must put in an appearance. (True Spiritual Sadhna is nature cure). Result will come. To free them before hand is to suppress the evil sanskars which must rise sometimes again before health is possible. *Be not upset by aggravations, Please!*

Now you will do well to read the pamphlet which I wrote for you viz. 'To Aspirants'.

Thirdly:– Cling to the name; let it ring in every pore of your being. His Grace will be descending.

Fourthly:– Give up the idea that you must remain ailing physically for ever. The descent of Mahashakti will gradually give you more energy and wash out all disease, physical, emotional, mental – all. Pray firmly to Him. (ref. to For Aspirants).

And be not impatient, and be not of weak faith. You shall have the courage to stand the aggravations. I shall try to think of you daily at some time or other.

So I have told you to avoid discussions for present at least. Do work in the positive direction. A little of prayers and Basis of Yoga daily. A little and no more. May the Lord bless you.

Yours in the Lord,

Ramanand

❖ ❖ ❖

Letter No. 10 : Shri Ram : Digoli.

12.08.1944

My dear .....,

Yours to hand, for which many thanks. I recently finished 'Mother Russia' by Maurice Hindus, to my knowledge, the latest book about Russia. The present conditions in Russia have appealed to me so greatly as also their achievements in the recent past that I have actually begun to welcome communism. Of course, in India, we must have the communism of our Lord – i.e. without destroying our culture. However, even the drift of capitalism is at present towards encouraging state ownership.

With the price which is required for the establishment of communism and with its short-comings (especially the restriction of free thought) one may prefer a communised capitalism which will have most of the good of communism and capitalism. I for one, doubt very much that India will have communism atleast in some decades to come. Let me not enter into the political future of India.

Now, you have asked your attitude towards money. We have to recognize the real place of money in life and give it its due. That it is necessary for living and making good use of life is plain, and if it is earned to spend it rightly, I do not see any harm at all. If it is made an end in itself i.e. we begin to love gold for its own sake, it is a terrible attachment and will bring us again and again down here till we are sick of it.

Capitalism necessitates hoarding. We must have some thing for the rainy day, and this generally leads to a fear complex and may actually result in undue hoarding. The way out is: have faith in Lord (some would say, Karma). The whole property of a man may slip out of his hands within the course of minutes. Be prepared in other words, for all that the Lord may bring upon you. Fear it not – be ready to welcome even the worst. This is mental

renunciation. When this is acquired the path is clear. Earn rightly, spend rightly and save what you can normally without the ambition to be multimillionaire, without the fear of being reduced to penury. This saved money if employed in productive ways, actually means service of society.

In capitalism a capitalist is actually serving the society if he is opening up new channels of production. Capital in a capitalist society is a necessity. This raises yet another question: the right way of making money. Again, clear your mind of attachment to money as such, know that by doing business you are doing service of the society (and it actually is so, only we do not leave the narrow egoistic point of view), and knowing this we would not employ means which would harm the society. If the businessman takes his share, it is no sin but it must not become profiteering. I hope the guiding leads that I have given above, if followed will solve the problem.

Fear not money, let it come in millions if it comes, and employ it well, to the good of self and others.

If you ask the problem of poverty and general suffering, I would say: We are to do our duty. As far as money is concerned, put aside a percentage of your income for that end. The Smritikars ordain 10%.

We had a nice Janmashtmi celebration here. We had Akhand Gita Patha in Hindi verse with Samputa:

मत्पर हो, मेरे हित करता, कर्म भक्तिमय संग विहीन।
निर्वैरी जो सब जीवों में, होता है वह मुझ में लीन॥

It was rounded off with a talk and a nice Sankirtan. The whole of it took seven hours. In the night, we had Shrimad Bhagwad Gita, only an adhyaya and 4 hours' Akhand-Rama-Nam San-Kirtan.

Devote as much time for Japam (meditation) as you can without undue strain, please.

With best wishes,

Yours in the Lord,

Ramanand

❖ ❖ ❖

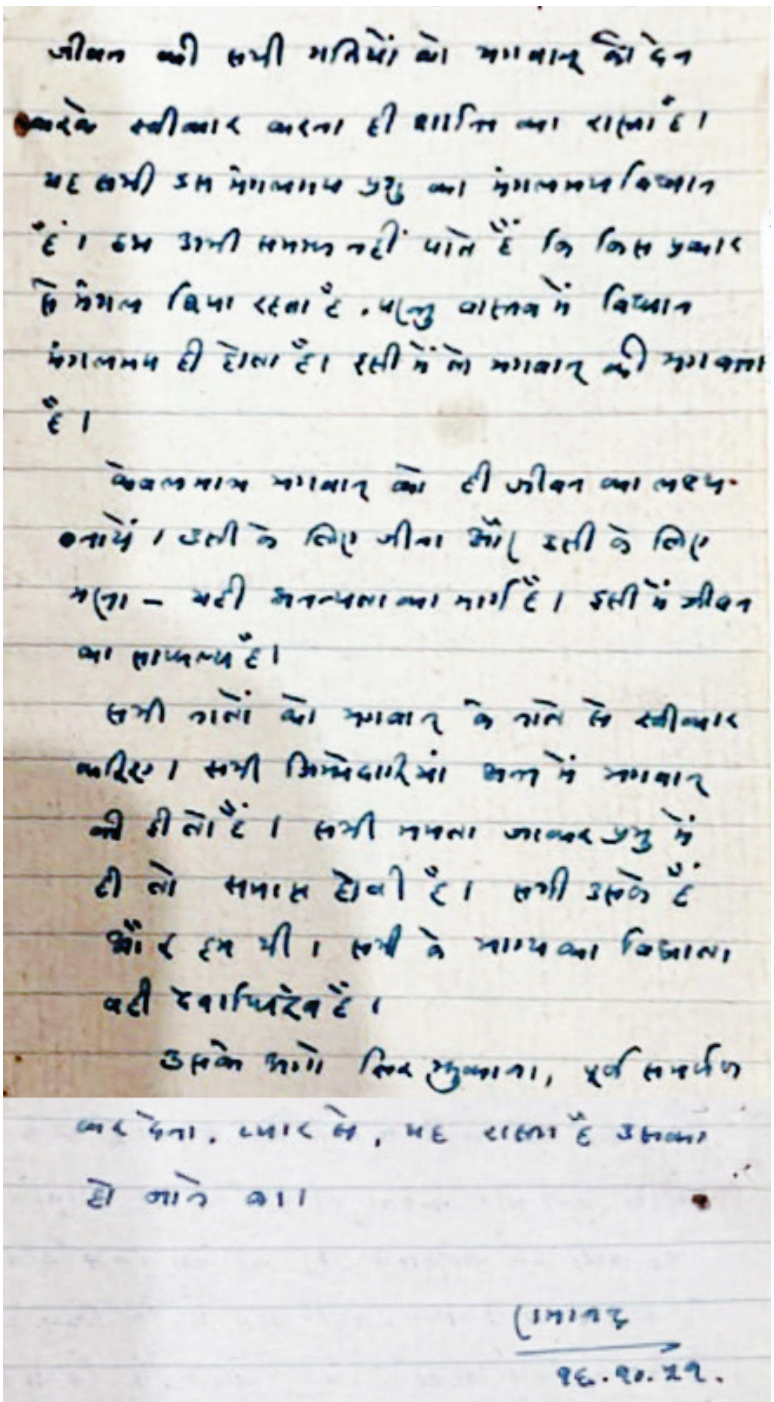

सरदारनी विद्यावती जी के सौजन्य से प्राप्त गुरु महाराज के हस्तलिखित पत्र की छायाप्रति

जीवन की सभी गतियों को भगवान् की देन करके स्वीकार करना ही शान्ति का रास्ता है। यह सभी इस मंगलमय प्रभु का मंगलमय विधान है। हम अभी समझ नहीं पाते हैं कि किस प्रकार से मंगल किया रहता है, परन्तु वास्तव में विधान मंगलमय ही होता है। इसी में तो भगवान् की महानता है।

केवलमात्र भगवान् को ही जीवन का लक्ष्य बनायें। उसी के लिए जीना और इसी के लिए मरना - यही अनन्यता का मार्ग है। इसी में जीवन का साफल्य है।

सभी बातों को भगवान् के नाते से स्वीकार करिए। सभी जिम्मेदारियां अन्त में भगवान् की होती हैं। सभी ममता जाकर प्रभु में ही तो समाप्त होती है। सभी उसके हैं और हम भी। सभी के भाग्य का विधाता वही देवाधिदेव है।

उसके आगे सिर झुकाना, पूर्ण समर्पण कर देना, प्यार से, यह रास्ता है उसका हो जाने का।

रामानन्द

१६.१०.५१.

भागवत के मोती

भागवत परमहंसों की संहिता है। श्री गुरु महाराज ने दिगोली तपस्थली में 6 महीने तक भागवत कथा पर प्रवचन किया था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए ऐसी प्रेरणा हुई है कि पत्रिका के इस अंक से एक नया स्थाई स्तम्भ 'भागवत के मोती' नाम से आरम्भ किया जाये। प्रस्तुत है इस स्तम्भ की प्रथम कड़ी –

1. अपने गुरु को ही आराध्यदेव परम प्रियतम मानकर अनन्य भक्ति के द्वारा उस ईश्वर का भजन करना चाहिए। (भागवत 11.2.37)
2. परमपुरुष परमात्मा ने पंचमहाभूतों के द्वारा बने हुए प्राणि-शरीरों में अन्तर्यामी रूप से प्रवेश किया और अपने को ही पहले एक मन के रूप में और इसके बाद पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा पाँच कर्मेन्द्रिय – इन दस रूपों में विभक्त कर दिया तथा उन्हीं के द्वारा विषयों का भोग कराने लगे। वह देहाभिमानी जीव अन्तर्यामी के द्वारा प्रकाशित इन्द्रियों के द्वारा विषयों का भोग करता है और इस पंचभूतों के द्वारा निर्मित शरीर को आत्मा – अपना स्वरूप मानकर उसी में आसक्त हो जाता है। यह भगवान् की माया है। (भागवत 11.3.4-5)
3. अब वह इन्द्रियों से सकाम कर्म करता है और उनके अनुसार शुभ कर्म का फल सुख और अशुभ कर्म का फल दु:ख भोग करने लगता है और शरीरधारी होकर इस संसार में भटकने लगता है। यह भगवान् की माया है। (भागवत 11.3.6)
4. स्त्री-पुरुष-सम्बन्ध आदि बन्धनों में बँधे हुए संसारी मनुष्य सुख की प्राप्ति और दु:ख की निवृत्ति के लिये बड़े-बड़े कर्म करते रहते हैं। जो पुरुष माया के पार जाना चाहता है, उसको विचार करना चाहिए कि उनके कर्म का फल किस प्रकार विपरीत होता जाता है। वे सुख के बदले दु:ख पाते हैं और दु:ख निवृत्ति के स्थान पर दिनोंदिन दु:ख बढ़ता ही जाता है। एक धन को ही लो। इससे दिन पर दिन दु:ख बढ़ता ही है, इसको पाना भी कठिन है और किसी प्रकार मिल भी जाये तो आत्मा के लिये तो यह मृत्यु-स्वरूप ही है। जो इसकी उलझनों में पड़ जाता है वह अपने आप को भूल जाता है। इसी प्रकार घर, पुत्र, स्वजन-सम्बन्धी, पशु-धन आदि भी अनित्य और नाशवान ही हैं; यदि इन्हें कोई जुटा भी ले तो इनसे क्या सुख शान्ति मिल सकती है? (भागवत 11.3.18-19)
5. इसी प्रकार जो मनुष्य माया से पार जाना चाहता है, उसे यह भी समझ लेना चाहिए कि मरने के बाद प्राप्त होने वाले लोक-परलोक भी ऐसे ही नाशवान हैं क्योंकि इस लोक की वस्तुओं के समान वे भी कुछ सीमित फल मात्र हैं। वहाँ भी पृथ्वी के छोटे-छोटे राजाओं के समान बराबर वालों से होड़ अथवा लाग-डाँट रहती है, अधिक ऐश्वर्य और सुख वालों के प्रति छिद्रान्वेषण तथा ईर्ष्या-द्वेष का भाव रहता है, कम सुख और ऐश्वर्य वालों के प्रति घृणा रहती है एवं फल पूरा हो जाने पर वहाँ से पतन तो होता ही है, उसका नाश भी निश्चित है। नाश का भय वहाँ भी नहीं छूट पाता। (भागवत 11.3.20)
6. भागवत-धर्म का पालन करने वाले के लिये यह नियम नहीं है कि वह एक विशेष प्रकार का कर्म ही करे। वह शरीर से, वाणी से, मन से, इन्द्रियों से, बुद्धि से, अहंकार से, अनेक जन्मों अथवा एक जन्म की आदतों से स्वभाव वश जो-जो करें, वह सब परम पुरुष भगवान् नारायण के लिये ही है – इस भाव से उन्हें समर्पण कर दे – यही सरल से सरल, सीधा सा भागवत धर्म है। (भागवत 11.2.36)

साधन सम्मिश्रण

एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी था जिसकी ग्रहणशीलता उत्तम थी, निष्ठावान था, परिश्रमी था। बी.ए. तक उसने प्रथम श्रेणी में परीक्षाएँ पास कीं और सभी उसको बहुत चाहते थे। बी.ए. पास करने के बाद उसका सम्पर्क एक ऐसे तार्किक व्यक्ति से हो गया जो विभिन्न विधाओं में दखल तो रखते थे परन्तु निष्ठा किसी एक विशेष पद्धति पर नहीं थी। वह प्रतिभाशाली विद्यार्थी जिसका नाम विद्याचरण था वह इसके सम्पर्क में आ गया। विद्याचरण ने एम.ए. अर्थशास्त्र में दाखिला लिया परन्तु उन महाशय के सम्पर्क से उसके अन्दर ऐसा संशय उत्पन्न हुआ जिससे उसके अन्दर यह धारणा बलवती होती गई कि शिक्षा के अनेकों क्षेत्र हैं और उसे एक साथ विभिन्न शिक्षा विधाओं की उत्तम बातें भी ग्रहण करनी चाहिए और अर्थशास्त्र की शिक्षा भी उसे करते रहना चाहिए। फलतः वह अनौपचारिक रूप से विज्ञान की कक्षा में रसायन शास्त्र (Chemistry) के अध्यापक के व्याख्यान (Lecture) और पुस्तकें पढ़ने लगा। साथ ही वह एम.कॉम. में बैंकिंग और लेखा शास्त्र (Accountancy) सीखने का भी प्रयास करने लगा। परिणाम यह हुआ कि विद्याचरण जिसकी शैक्षिक वृत्ति प्रथम श्रेणी की थी वह एम.ए. अर्थशास्त्र प्रथम वर्ष में उत्तीर्ण ही नहीं हो पाया। अगले वर्ष फिर उसने इसी पद्धति से शिक्षा ग्रहण करने का प्रयास किया और सफलता उससे दूर भागती गई। निराश होकर उसने शिक्षा ग्रहण करना बन्द कर दिया और एक परचून की दुकान कर ली।

उपरोक्त उदाहरण एक सच्ची घटना पर आधारित है परन्तु यथार्थ में हर व्यक्ति के संघर्षमय जीवन में इस प्रकार की समस्याएँ आती हैं जिनका सामना करने के लिये वह विभिन्न तौर-तरीकों का प्रयोग करता है अर्थात् एकनिष्ठा से कर्म करने की उसकी प्रवृत्ति क्षीण होती जाती है और उसकी छिपी हुई प्रतिभा विकसित होने से पहले ही कुम्हला जाती है जैसे एक गुलाब का पौधा फूल देने से पहले ही कुम्हला जाता है। साधना में तो इस प्रकार के अवसर पग-पग पर आते हैं जिससे प्रेरित होकर हम गुरु की बताई हुई विधि के अनुसार साधन पद्धति पर निष्ठा से टिकने की बजाय विभिन्न साधन पद्धतियों का भी आश्रय लेते हैं। आश्रय लेने के हम आदी हो गये हैं। परिणाम यह हुआ कि अपनी साधना पद्धति को तो हम ग्रहण नहीं कर पाते और दूसरी पद्धति को हम पकड़ नहीं सकते। संशय, निराशा, भ्रम, अन्धविश्वास ही हमारे हाथ लगता है। अध्यात्म विकास अपने अन्दर, साधक के अन्दर भागवती गुणों का अवतरण वह भगवती कृपा प्राप्त ऐसे जीवन के परम पावन लक्ष्य और तौर-तरीकों से हम वंचित रहते हैं और अपने धर्म-ग्रन्थों, गुरुओं एवं भगवान् को दोषी ठहराते हैं।

हमारी साधना प्रभु-कृपा पर आश्रित है। इसमें राम नाम के सतत जाप से हमारे अन्दर भक्ति एवं समर्पण के भागवती गुण स्वतः धीरे-धीरे उत्पन्न होते जाते हैं।

गुरुदेव भगवान् की अवरोह मार्ग की साधना पद्धति में साधक देखने में तो साधना एवं कर्म करता, भोग करता प्रतीत होता है परन्तु राम नाम के सतत जाप से उसकी मनोवृत्ति में ऐसा आमूल-चूल परिवर्तन होता है कि उसके अन्दर अकर्तृत्व विकसित होता जाता है अर्थात भागवती चेतना शनैः-शनैः अपना प्रभाव उस पर विकसित करती जाती है और वह उस सीमा तक सहज स्वाभाविक रूप से भगवान् के ऊपर आश्रित होने का आदी हो जाता है।

परन्तु इस प्रकार की आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक है कि साधक गुरु की बताई विधि के अनुसार साधन पद्धति अपनाये और किसी भी कीमत पर साधन सम्मिश्रण से बचे। स्वामी जी अपनी

पुस्तक आध्यात्मिक साधन (भाग 1) के अध्याय 15 (कुछ विशेष बातें) में साधक को साधन सम्मिश्रण से सावधान करते हुए लिखते हैं कि ''साधक को अपने साधन सम्मिश्रण से बचने में विशेष सजग रहना आवश्यक है। साधन को यदि अनन्यतापूर्वक न अपनाकर थोड़ा यह और थोड़ा कुछ और जप-साधनादि किया जायेगा तो उतनी ही भीतर की क्रिया भी जटिल हो जायेगी और पथ विषम। प्राय: प्राप्त होने वाले साधन आरोह पथ के हैं। उनके साथ सम्मिश्रण के फलस्वरूप कई प्रकार की जटिलताओं में पड़ने की सम्भावना रहती है। स्वयं विशेष केन्द्रों में ध्यानादि द्वारा शक्ति को जागृत करने का प्रयत्न भी अनुपयुक्त ही नहीं, बाधक तथा हानिकारक भी हो सकता है।''

1. गुरुदेव भगवान् ने यह कहा है कि राम नाम का जाप अपने में सम्पूर्ण साधना है। उनके द्वारा बताई हुई विधि से जाप करने से स्वत: निरन्तरता, सूक्ष्मता सहज में उत्पन्न होती जाती है और साधक बेखबर रहता है परन्तु वो खुली आँख बोलते, खाते-पीते, व्यवहार करते ही सूक्ष्मतर राम नाम के जाप से ओत-प्रोत रहता है। उसके शरीर में स्पन्दन भी उत्पन्न होते हैं जो राम नाम का जाप ही है। परन्तु इस पद्धति पर करने वाले बहुत कम साधक मिलते हैं जो यह कहते नहीं थकते हैं कि मात्र राम नाम के जाप से कुछ नहीं होता है। हमें ध्यान केन्द्रित करके जाप करना चाहिए। यदि जाप में मन नहीं लगता, मन इधर-उधर भटकता है तो जाप में लगाया हुआ समय बेकार गया। यथार्थ में स्वामी जी की साधना पद्धति के अनुसार लय सहित शरीर को ढीला छोड़कर सहज आसन में बैठते हुए मौन भाव में राम नाम का जाप करना चाहिए और अन्दर से जाप के होने वाले स्पन्दनों को सुनना चाहिए। स्वामी जी की साधना में ध्यान लगाना, शरीर के विभिन्न केन्द्रों को एकाग्र करना, पद्मासन में बैठना, राम नाम के जाप को अन्दर आने वाली साँसें व बाहर जाने वाली साँसों में तालमेल बिठाना नितान्त वर्जित है। प्रारम्भ में तो थोड़ा बहुत किया जा सकता है परन्तु शीघ्र ही साँस गौण हो जाती है और रह जाता है केवल राम नाम जो सोते-जागते, खाते-पीते, हर काम को करते अनवरत मानसिक रूप से निष्प्रयास सहज में चला करता है। अत: राम नाम के जप को पूज्य गुरुदेव की बताई हुई विधि के अनुसार ही करना चाहिए। उसमें दूसरे साधन का मिश्रण करना साधक की प्रगति के लिये बाधक है।

2. स्वामी जी की साधना पद्धति का लक्ष्य कुण्डलिनी जागृत करना कदापि नहीं है परन्तु प्रवचनों एवं लेखों में ऐसा उपदेश दिया जाता है जिससे यह परिलक्षित होता है कि स्वामी जी की साधना का लक्ष्य भी कुण्डलिनी जागृत करना है। इस विचारधारा के विपरीत स्वामी जी की साधना में साधक अपने आपको, अपने समस्त विचारों को, क्रियाओं को, धारणाओं को, संकल्प एवं विकल्पों को व मान्यताओं को प्रभु के चरणों में समर्पित कर देता है और महाशक्ति साधक के अणु-अणु का परिशोधन करती चली जाती है। जब प्रभु उचित समझते हैं तो एक के बाद दूसरे चक्र जागृत हो सकते हैं परन्तु भक्ति और समर्पण में रत साधक को इसका ज्ञान तक नहीं होता परन्तु कभी-कभी वह हैरान हो जाता है जब अपने को बदला हुआ पाता है। इस विषय पर भी साधक को साधन सम्मिश्रण के प्रति सावधान रहना चाहिए।

3. संस्कारगत हम विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार के व्रत करने के आदी हैं, उनमें से कुछ व्रत तो कठोर भी हैं जिसमें निर्जल भी रहना पड़ता है। हमारे पूज्य स्वामी जी ने स्पष्ट कहा है कि शरीर को कूटना-पीसना पाप से खाली नहीं हैं। स्वामी जी ने इसके विपरीत नित्य का सर्वांगीण व्रत बताया है जिसके पीछे कोरे विधि-विधान या देवी-देवता को खुश करना अभीष्ट नहीं है। नित्य के व्रत से तात्पर्य है कि भोजन सादा हो एवं पौष्टिक परन्तु हल्का हो, समय से भगवान् को अर्पित करके भोजन

लिया जाये और जब साधक भोजन करके उठे तो आधी रोटी खाने की गुंजाइश रखे परन्तु भूखा भी न उठे। शरीर के विभिन्न अंगों का व्रत इस प्रकार है – मन राम नाम में व्यस्त रहे तो विषय वासनाओं की ओर वह प्रवृत्त ही नहीं होगा। आँखें हर वस्तु में प्रभु की शक्ति का अवलोकन करें, वासना का नहीं, कान राम नाम धुन सुनने के आदी हों, दूसरों की बुराई नहीं, जिह्वा से मधुमयी वाणी निकले, कटु नहीं, भाव जन कल्याणकारी हों, आत्म-कल्याणकारी हों। पैर गलत जगह न जायें, हाथ से कोई अन्यायपूर्ण गलत कार्य न हो अर्थात रिश्वत आदि न लें – कुछ इस प्रकार से हैं स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित व्रत आदि। बहुत सी साधिकाएँ स्वामी जी की आज्ञा के पालनार्थ करवा चौथ, अहोई अष्टमी, महालक्ष्मी आदि को त्यागकर राम नाम के जाप से उन व्रतों को पूरा कर लेती हैं।

4. स्वामी जी के शिष्य को गुरु चरणों में प्रीति और वचनों में अडिग विश्वास होना चाहिए। राम नाम का मन्त्र गुरुदेव ने दिया है वह महामन्त्र है, दिव्य है, समस्त मन्त्रों का बीज है। सभी मन्त्र एवं देवी देवता इसी बीज मन्त्र से शक्ति ग्रहण करते हैं और अपने कार्यक्षेत्र के अन्दर जनकल्याण करते हैं और फिर राम नाम की ओर साधक को प्रवृत्त कर देते हैं और फिर साधक को राम नाम गुरुदेव द्वारा मन्त्र दिये जाने के पात्र बनते हैं। अतः जब हमको राम नाम का दिव्य मन्त्र गुरु की संकल्प शक्ति के द्वारा प्राप्त हो चुका है तो हमें न तो अन्य मन्त्रों की और न ही अन्य देवी-देवताओं की साधना के रूप में पूजा करनी चाहिए। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम किसी भी मन्त्र या देवी देवता का अनादर करें या अविश्वास करें। सभी मन्त्र उसी के मन्त्र हैं और सभी उसी से बंधे हैं जैसे एम.ए. पास करने पर 'अ' का सहारा लेकर पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं रहती है उसी प्रकार राम नाम के मन्त्र के जापक को अन्य मन्त्रों और देवी देवताओं की साधना के रूप में पूजन करना प्रासंगिक नहीं रह जाता।

साधन सम्मिश्रण पर चर्चा का तात्पर्य यह नहीं है कि हम उनकी साधना पद्धति में बदलते हुए समय के अनुसार वैज्ञानिक परिवर्तन न करें। श्रीमद्भगवद्गीता के 7वें अध्याय का 20वाँ श्लोक इस सन्दर्भ में प्रासंगिक है –

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया॥

अर्थात विभिन्न कामनाओं के द्वारा जिनका ज्ञान हर लिया गया है वह दूसरे देवताओं का भजन करते हैं, तदनुरूप उस नियम को धारण कर अपनी प्रकृति के द्वारा बंधे हुए हैं। तात्पर्य यह है ''हमें चोरी नहीं करनी चाहिए, लोग दूसरे-दूसरे देवताओं का भजन करते हैं, कोई रुद्र, यम अग्नि का पूजन करते हैं, कोई प्रेतात्माओं को पूजते हैं, कोई भूत, भूतनियों की पूजा करते हैं। भगवान् तो सभी में हैं।'' स्वामी जी आगे लिखते हैं – ''भगवान् के ही सभी रूप हैं। इस ज्ञान के सत्य होते हुए भी व्यवहार में उनका व्यक्तित्व और गुण दोष आदि हैं।'' स्वामी जी बहुत जोर देकर कह रहे हैं तो क्यों व्यक्ति देवाधिदेव को छोड़कर छोटी-छोटी सीमित सत्ताओं का भजन करते हैं? विभिन्न कामनाएँ व्यक्ति के ज्ञान को हर लेती हैं। आदमी सोचता है कि यह काम हनुमान जी झटपट कर देंगे, उनको भेंट चढ़ाओ, नारियल चढ़ाओ। वह भूल जाता है कि देवता जितना छोटा है उसे प्रसन्न करना उतना ही आसान है।

प्रायः प्रचलित साधन पद्धतियाँ अर्थात 'आरोह मार्ग' में यह धारणा जड़ पकड़ चुकी है कि आवागमन के दौरान जीव को (रौरव नरक) से होकर गुजरना पड़ता है। यहाँ तक कि माँ की कोख में जीवात्मा घोर नरक की यातनाएँ पाता है।

स्वामी जी की साधना पद्धति के अनुसार यह प्रक्रिया यातनामय न होकर विकासात्मक है। जीव के इस प्रकार के विकास में निहित है पूरे ब्रह्माण्ड का विकास। सृजन, पालन और लय विकास की विशिष्ट

प्रक्रिया है जो परब्रह्म परमेश्वर की इच्छा से समस्त देवी देवताओं सहित कण-कण और अणु-अणु पर लागू होती है। सभी को इसी से गुजरना होता है। ऐसी परिस्थिति में आवागमन कष्टदायक और दुर्भाग्य का सूचक कैसे हो सकता है।

इसी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर हम जीवात्मा की मुक्ति को जीवन का लक्ष्य मानते हैं। ज्ञातव्य हो – मुक्ति का तात्पर्य आवागमन से छुटकारा पाना है परन्तु स्वामी जी ने Evolutionary Outlook में Liberation के अन्दर च. 50-51 में लिखा है – ''हमें मोक्ष की खोज नहीं करनी है। पाठशाला का स्नातक पाठशाला में पुनः प्रवेश नहीं पाता। इसी प्रकार पृथ्वी के अनुभव में स्नातक हुआ व्यक्ति यहाँ फिर प्रवेश नहीं पाता। तब हम शिक्षक या इसी प्रकार के अन्य पद पर आ सकते हैं, विद्यार्थी के रूप में नहीं।''

स्वामी जी की इस शिक्षा के उपरान्त भी हम लोग आवागमन के दुःख को दुर्भाग्य मानते हैं और आवागमन से मुक्त होने के लिये साधना करते हैं। इस प्रकार का भ्रम अज्ञानता है। ऊपर बताई गई पुस्तक का हिन्दी अनुवाद ''जीवन विकास एक दृष्टि'' शीर्षक के नाम से भी उपलब्ध है। इस पुस्तक का अध्ययन करने के बाद हमारी प्रचलित भ्रामक धारणायें ही बदल जायेंगी।

– रमना सेखड़ी

❖ ❖ ❖

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचार

प्रारब्ध की प्रबलताः एक लकड़हारा परम भक्त था। उसे भगवती के साक्षात् दर्शन हुए, उन्होंने उसे खूब चाहा और उस पर अत्यन्त कृपा की, पर इतना होने पर भी उसका लकड़हारे का काम नहीं छूटा। उसे पहले की ही तरह लकड़ी काट कर ही रोटी कमानी पड़ी। इसी प्रकार देवकी को भी कारागार में शंख चक्र गदा पद्मधारी भगवान् के दर्शन हुए फिर भी उनका कारावास नहीं छूटा।

तात्पर्य यह है कि प्रारब्ध कर्मों का भोग तो भोगना ही है। जब तक वह है तब तक देह धारण करना ही पड़ेगा। एक काने आदमी ने गंगा स्नान किया। उसके सारे पाप तो छूट गये पर कानापन दूर नहीं हुआ। उसे अपने पूर्व जन्म का फल भोगना था वही वह भोगता रहा।

प्रसन्नता मानव का स्वभावः देह का सुख दुःख चाहे जो कुछ भी हो पर भक्त को ज्ञान भक्ति का ऐश्वर्य रहता है, वह ऐश्वर्य कभी नष्ट नहीं होता। पाण्डवों पर कितनी विपत्तियाँ आईं पर उनका चैतन्य एक बार भी नष्ट नहीं हुआ। यही ज्ञानी भक्त की पहचान है। हमें समझना होगा दुःख वृत्तियाँ विकार शोक विषाद स्वाभाविक नहीं हैं, आरोपित हैं। पानी अगर गर्म है तो या तो अग्नि के सामीप्य से या सूर्य की किरणों के कारण गर्म है। अगर उसको छोड़ दिया जाये तो वह शीतल हो जायेगा।

इसी प्रकार जीव जिसका है यदि उसी का बनकर रहे तो वह स्वाभाविक है। स्वभाव की स्थिति आनन्द की स्थिति है। हम परमात्मा से बिछुड़ गये इसलिये दुखी हैं। आत्मा से उठ रही परमात्मा की आवाज की अवहेलना मत कीजिये, चाहे उसमें हानि लाभ जो भी दिखे। तर्क वितर्क ज्यादा मत करो।

संकलनकर्त्री **रेवा भाम्बरी**

पूज्य साहू जी का जीवन चरित्र

तृतीय भाग

साधना परिवार के सभी भाई-बहनों को मेरी राम-राम!

सन् 1947 में पूज्य साहू जी एवं अन्य साथियों के साथ गुरुदेव का विचार विमर्श हुआ कि अब गुरुवर के विचारों एवं अध्यात्म की इस धारा को आगे बढ़ाने के लिये एक मासिक पत्रिका निकालने का प्रबन्ध किया जाये। गुरुदेव का परिचय श्री बाबूराम कुमठेकर जी से सन् 1943-44 में हुआ था। वह महात्मा गाँधी के साथ अनशन आदि के कारण काफी बीमार थे। उनका इलाज एवं देखभाल पूज्य साहू जी द्वारा गुरुदेव के निर्देश पर की गई थी। गुरुदेव ने कहा क्यों ना कुमठेकर जी से इस पत्रिका को निकालने में सहायता ली जाये वह साहित्य के व्यक्ति भी हैं।

इसके समस्त खर्च एवं व्यवस्था का कार्य पूज्य साहू जी को गुरुदेव ने सौंपा। प्रकाशन कार्य दिल्ली से वहाँ भी कार्यालय बनाकर किया गया। पत्रिका का नाम युगधर्म (मासिक) रखा गया। उसके केवल तीन अंक निकल सके। अत्यधिक खर्च जो उस समय में हजारों हजारों में था पर उपलब्धि कुछ ना होने के कारण गुरुदेव द्वारा बन्द करा दी गई। और दिल्ली का कार्यालय बन्द करके साधना कार्यालय बीसलपुर में खोलकर उसमें सब पुस्तकें आदि लाने का आदेश गुरुदेव ने दिया। गुरुदेव द्वारा गीता आदि पर लिखे गये लेख 'साधना' नामक पत्रिका में छापना शुरू किये गये। छपाई की कोई व्यवस्था ना होने के कारण पत्रिका साइक्लोस्टाइल मशीन द्वारा छाप कर भेजी जाने लगी। यह कार्य 2 वर्ष तक सन् 1950 तक चला। अब छपाई की व्यवस्था बरेली के आजाद में की गई जो बाद में किशोर प्रेस द्वारा की जाती रही। बरेली से पत्रिका का छपवाना भी एक दुष्कर कार्य था, क्योंकि बीसलपुर से आवागमन का कोई साधन ना था। केवल सुबह शाम दो ट्रेनें छोटी लाइन की पीलीभीत जाती थी। ऐसे में बरेली जाने आने में कई बार दो दिन लग जाते थे।

पर गुरुदेव की कृपा और पूज्य साहू जी की लगन और एक-निष्ठता ने कार्य को रुकने ना दिया। अब पत्रिका को त्रैमासिक कर दिया गया और उसमें गुरुदेव के साथ-साथ साधकों के लेख एवं संस्मरण आदि भी छपने लगे।

पत्रिका के सदस्यों की संख्या काफी बढ़ चुकी थी। पत्रिका का सम्पादन पूज्य साहू जी द्वारा ही किया जाता रहा। इस बीच सन् 1946 में गुरुदेव द्वारा लिखी पुस्तकों आध्यात्मिक विकास और आध्यात्मिक साधन भाग-1 का प्रकाशन पुणे से करवाया गया। सन् 1947 में गुरुदेव द्वारा कैलाश दर्शन, सन् 1948 में जीवन रहस्य एवं उत्पादनी शक्ति लिखी गईं, जिनका प्रकाशन बीसलपुर कार्यालय द्वारा ही किया गया। छपाई अलग-अलग स्थानों से कराई गई।

सन् 1950-51 में गुरुदेव के आदेश से पूज्य भाई पुरुषोत्तम भटनागर जी ने गुरुदेव के पत्रों का संकलन करके छोटी-छोटी पुस्तकें – 1. हमारी साधना, 2. हमारी उपासना, 3. साधना और व्यवहार, 4. अशान्ति में, आदि संकलित कीं, जिनके संकलन का कार्य बीसलपुर में पूज्य साहू जी की सहायता से हुआ। पूज्य गुरुदेव ने इन पुस्तकों की प्रस्तावना भी स्वयं लिखी।

सन् 1951 में ही गुरुदेव ने Evolutionary Outlook on Life और Evolutionary Spiritualism लिखीं जिनका प्रकाशन भी साधना कार्यालय बीसलपुर द्वारा किया गया।

यहाँ पर पूज्य साहू जी की कुछ और बातें याद आ रही हैं, जिनका यहाँ जिक्र करना आवश्यक लगता है।

1. पूज्य साहू जी ने पत्रिका का सम्पादन 8-10 वर्षों तक स्वयं किया और छोटी पुस्तकों के संकलन का कार्य भी पूज्य पुरुषोत्तम जी के साथ किया, परन्तु किसी स्थान पर पत्रिका या पुस्तकों में अपना नाम ना आने दिया।

2. गुरुदेव किसी साधक के बच्चे की पढ़ाई हो या किसी के निजी पारिवारिक जीवन में समस्यावश जरूरत

या शिविर में दूसरे साधकों के खर्च को वहन करने की जरूरत, वह पूज्य साहू जी से करवाते और पूरी तरह गुप्त रखा जाता। कितना था पूज्य साहू जी पर विश्वास।

3. पत्रिका एवं अन्य पत्राचार आदि में भी काफी धन खर्च होता था जिसको पूज्य साहू जी सहर्ष बिना किसी को बताये खर्च करते थे।

4. एक बार बीसलपुर पूज्य साहू जी की कोठी के ऊपर बड़े हॉल में गुरुदेव प्रवचन कर रहे थे। इसी हॉल में गुरुदेव जब बीसलपुर में होते तो प्रवचन होता था। प्रवचन में बाहर के लोगों के प्रश्न और समस्यायें चल रही थीं। एक भाई को कोई शारीरिक असाध्य कष्ट था। उसके लिये उसने गुरुजी से दवा की विनती की। इस बार गुरु जी अपना बायोकेमिक वाला बैग लाना भूल गये थे। उन्होंने धीरे से साहू काशीनाथ को चार पुड़ियों में चीनी पीसकर बाँध लाने के लिये कहा। पूज्य साहू जी ने वैसा ही किया, जो गुरुदेव ने उस रोगी को दे दीं। और बोले सुबह शाम 2 दिन खाना, फिर हाल बताना। 2 दिन बाद वह आया तो पूर्ण स्वस्थ हो चुका था।

ऐसे थे हमारे गुरुदेव जो बिना श्रेय लिये दवाई के बहाने अपनी शक्ति द्वारा लोगों की पीड़ा हरते रहते थे। ऐसे ही थे उनके परम शिष्य साहू जी, जो बिना नाम की आकांक्षा के गुरुदेव के दूत बन कर सेवा में लगे रहते थे।

5. गुरु अपने शिष्यों में सेवा भाव जागृत करता है और अहंकार को तोड़ता है, ऐसा करना साधना को गति देने के लिये आवश्यक होता है। एक बार गुरुदेव बीसलपुर में आये और बोले इस बार तुम्हें और तुम्हारे साथियों को मेरे साथ हरिजन बस्ती में चलकर उनकी सेवा, सहायता और उनके कष्टों के निवारण के बारे में विचार करना है, उन्हें राम नाम की ओर प्रेरित भी करना है। अब समझने की बात यह है कि सन् 1940 का दशक और 20-25 गाँवों का प्रतिष्ठित जमींदार हरिजन बस्ती में जाकर उनकी सेवा करे, यह एक बड़े अहंकार को तोड़ना और सेवा के उच्च मापदण्डों को स्थापित करना ही तो था, जो पूज्य साहू जी ने किया।

6. पूज्य साहू जी को उस समय की ब्रिटिश सरकार ने ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किया हुआ था। वह जिले की जूरी के सदस्य रहे और समय-समय पर हुए महत्वपूर्ण फैसलों का हिस्सा भी रहे।

अब सन् 1947 का समय आ चुका था। हमारे साधना शिविर निर्बाध रूप से आयोजित हो रहे थे। गुरुदेव का सतत बीसलपुर आना-जाना चल रहा था। आनन्द की वर्षा हो रही थी। इसी समय देश को स्वतन्त्रता मिली और 30 जनवरी 1948 को गाँधीजी की हत्या कर दी गई। इसके बाद हिन्दूवादी संगठन एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की धरपकड़ एवं जेल भेजना शुरू हुआ। पूज्य साहू जी भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता रहे थे। अतः उन्हें भी गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। पूरा परिवार इस हादसे से बेहद चिन्तित एवं विचलित था। गुरुदेव को जब पता चला तो वह पूज्य साहू जी से मिले और कहा कि यह तुम्हारे विकास का एक अहम पड़ाव है जिससे तुम्हें अत्यधिक लाभ होगा। इस समय साधना का अवसर भी खूब मिलेगा और तुम्हारी आध्यात्मिक यात्रा की गति भी बहुत तीव्र होगी। निश्चिन्त होकर उस महासत्ता की लीला को देखो। घर की समस्याओं से निश्चिन्त रहना। सब ठीक ठाक चलेगा 'मैं हूँ तो'। इस आश्वासन् के बाद पूज्य साहू जी ने अपनी 3 माह की जेल यात्रा या यूँ कहें विकास यात्रा आनन्द से खुशी-खुशी पूर्ण की।

गुरुदेव के आनन्द में समय तेजी से आगे बढ़ रहा था, तभी सन् 1950 में सरकार में जेड आर अधिनियम 1950 पारित किया जिसे जमींदारी उन्मूलन कानून 1950 कहा जाता है। जिसके द्वारा समस्त जमीदारी समाप्त कर दी गई, जो अच्छी अच्छी जमीनें किसानों को लगान पर दी जाती थी वे उनके स्वामित्व में हो गई। जो बेकार जमीने – ताल, तलैया, बंजर, बाग, नदी किनारे ऊसर कोई नहीं लेता था अपने नाम पर इन्द्राज रहती थीं। वे पूज्य साहू जी (पिता जी) के पास रह गई। गुरुदेव ने आश्वस्त किया कि कोई चिन्ता की बात नहीं है तुम्हारे पास बहुत है और रहेगा।

अब पूज्य साहू जी जमींदारी समाप्त होने के बाद विकल्प के रूप में नये रोजगार खोजने लगे, ताकि भविष्य सुरक्षित किया जा सके।

पहले एक जूट प्रेस लगाई जिससे इलाके से जूट खरीद कर उसकी गाँठे बनाई जाती थीं और उन्हें बड़ी जूट मिलों में भेजा जाता था। परन्तु परिवहन भुगतान आदि की समस्याओं के कारण यह व्यापार घाटे का सौदा साबित हुआ, जो बन्द कर दिया गया।

उसके बाद एक आइसक्रीम प्लांट जो उस जमाने में एक दुर्लभ चीज थी उसको दिल्ली से विशेष रुप से मंगा कर स्थापित किया गया। उसके लिये थरमस फ्लास्क आदि भी बाहर से मंगाये गये। उसका निर्माण शुरू हुआ। पानी वाली आइसक्रीम (चुस्की) बनाने में सैकरीन का प्रयोग किया जाता था। निर्माण शुरू हुए कुछ ही समय बीता था कि गुरुदेव का बीसलपुर आगमन हुआ। उन्होंने देखा कि चुस्की (पानी वाली कुल्फी) निर्माण में सैकरीन का उपयोग करना पड़ता है, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य को नुकसान होता है। गुरुदेव ने पूज्य साहू जी को आदेश दिया कि इसके निर्माण में सैकरीन का उपयोग बन्द करा दो। पूज्य साहू जी ने गुरुवर के कहने पर सैकरीन की जगह चीनी का प्रयोग शुरू किया। चीनी एक महंगा विकल्प था। साथ ही साथ चीनी पड़ने से कुल्फी बहुत जल्दी पिघल जाती थी। अत: उसकी बिक्री सम्भव न थी। बिक्री के लिये 8 से 10 घंटे तक बिना पिघले थरमस में रहना चाहिए ताकि बेची जा सके। उस जमाने में हजारों हजारों रुपये की लागत से शुरू किया गया काम पूज्य साहू जी ने गुरुदेव के कहने पर तुरन्त बन्द कर दिया। गुरुदेव के आदेश के आगे तन मन धन किसी को भी महत्त्व न दिया पूज्य साहू जी ने, ऐसा विलक्षण व्यक्तित्व था पूज्य साहू जी का।

अब सन् 1952 आ गया। गुरुदेव का कार्य क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा था। साधकों की संख्या भी काफी अधिक हो चुकी थी। गुरुदेव के आखिरी शिविर का आयोजन इलाहाबाद में हुआ। शिविर बहुत प्रभाव पूर्ण था। साधकों के साथ चर्चा में गुरुदेव ने संकेत किया कि मैं 52 तक हूँ। कोई कुछ न समझ सका कि गुरुदेव का क्या आशय है। इस शिविर के समापन पर गुरु पूजन के समय साधकों ने उन्हें फूलों से लाद दिया। उस समय जिसने भी गुरुवर को देखा उन्हें लगा वे समाधिस्थ हो गये हैं। उनमें जैसे जीवन के कोई लक्षण प्रतीत ही न हो रहे थे। वह काफी कमजोर भी हो गये थे।

इस शिविर के बाद गुरुदेव बीसलपुर आ गये। वह काफी कमजोर हो गये थे। कहते थे माँ शोधन कर रही है सब ठीक होगा। उनकी सेवा करने का प्रयास भी किया गया पर वह अधिकतर ध्यान में ही रहते थे। सबसे पहले वे उनके नियत कमरे में रुके। वह एक-दो दिन में ही बोले शक्ति का वेग बहुत अधिक हो गया है, शरीर के बर्दाश्त से बाहर होता जा रहा है, कमरा बहुत अधिक चार्ज हो गया है। मुझे दूसरे कमरे में ठहरने की व्यवस्था करो। एक-दो दिन बाद दूसरे, फिर तीसरे, फिर कुछ दिन स्टेशन रोड वाले बाग की कोठी (गेस्ट हाउस) में रुके। वहाँ भी वही हाल हुआ। शरीर कमजोर होता जा रहा था। कहते शक्ति का वेग बर्दाश्त के बाहर होता जा रहा है। यहाँ से फिर हरिद्वार चले गये। वहाँ कुछ समय माँ को सेवा का अवसर मिला और फिर 15 अप्रैल 1952 को हरिद्वार के रामकृष्ण मिशन अस्पताल में इस सदी के महानतम सन्त जिन्होंने दूसरों की सेवा में अपना जीवन न्योछावर कर दिया और अपनी दिव्य शक्ति का खुले हाथ से वितरण करके लाखों जीवन को प्रतिस्थापित किया, ने अन्तिम सांस लेकर परम ब्रह्म में प्रवेश किया।

साधकों के लिये यह घटना बहुत हृदय विदारक थी। सबको लग रहा था मानो उनका सब कुछ लुट गया हो, जीवन नि:सार हो गया है। अब वह जियेंगे कैसे? पर गुरुदेव ने जाने के बाद भी सारे परिवार को सम्भाला और आगे के विकास का रास्ता प्रशस्त किया। धन्य हो जय गुरुदेव।

इस तृतीय भाग को समाप्त करके सब भाई बहनों को राम राम के साथ यहीं विश्राम देते हैं।

– अनिल चन्द्र मित्तल

(भाग-4 अगले अंक में)

कार्यकारिणी समिति की बैठक का विवरण

आज दिनांक 18 अप्रैल, 2023 दिन मंगलवार को प्रातः 10:30 बजे साधना धाम हरिद्वार के कार्यालय में श्री विष्णु कुमार जी गोयल की अध्यक्षता में साधना परिवार की कार्यकारिणी के सदस्यों की बैठक हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे –

1. श्री विष्णु कुमार गोयल – अध्यक्ष
2. श्रीमती सुशीला जायसवाल – वरिष्ठ उपाध्यक्षा
3. श्री अनिल मित्तल – उपाध्यक्ष
4. श्री अनिरुद्ध अग्निहोत्री – कोषाध्यक्ष
5. श्रीमती सोमवती मिश्र – सदस्य
6. श्रीमती कृष्णा भण्डारी – सदस्य
7. श्रीमती कमला सिंह – सदस्य
8. श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल – सदस्य
9. श्री हरपाल सिंह राजपूत – सदस्य
10. श्री सुधीर कान्त अग्रवाल – सदस्य
11. श्रीमती रेवा भाम्बरी – सदस्य
12. श्री रविकान्त भण्डारी – प्रबन्धक
13. श्री जगत सिंह – सदस्य
14. श्रीमती हर्ष कपूर – विशेष आमन्त्रित सदस्य
15. श्री कृष्ण अवतार अग्रवाल – वि०आ० सदस्य

I. पूज्य गुरुदेव की वन्दना के पश्चात् बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। सर्वप्रथम पिछली बैठक दिनांक 17.12.2022 की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया। इसके उपरान्त कार्यवृत्त के अनुसार क्रमशः आगे बढ़ते हुए समय-समय पर धाम में लगने वाले शिविरों का कार्यक्रम निश्चित करने के सम्बन्ध में विचार-विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित निर्णय लिये गये –

1. **निर्वाण दिवस शिविरः** 14 अप्रैल की सायंकाल को अखण्ड जाप शुरू करने के उपरान्त 15 अप्रैल प्रातःकाल में पूज्य गुरुदेव को गंगा तट पर पुष्पांजलि देकर जाप की पूर्ति। इसके पश्चात मिशन अस्पताल में जाकर रोगियों के लिये दान व फल उपहार इत्यादि का वितरण। तत्पश्चात ब्राह्मण भोज व भण्डारा इत्यादि करके 15 अप्रैल को विश्राम। निर्वाण दिवस शिविर 16 अप्रैल से प्रारम्भ करके 21 अप्रैल की प्रातः को पूर्ति।
2. **बाल शिविरः** मई-जून की किसी भी समयावधि में जब भी संयोजक और बच्चे उपलब्ध हों, तिथियाँ निश्चित करके कार्यक्रम सम्पन्न किया जाये। इस बार का बाल शिविर 7 जून से 11 जून तक निश्चित किया गया है।
3. **गुरु पूर्णिमा शिविरः** 5 दिन-रात्रि का होगा तथा शिविर की पूर्ति उस दिन होगी जब पूर्णिमा की तिथि होगी। पूर्ति से पूर्व अखण्ड जाप 36 घंटे का होगा। प्रसाद वितरण तथा गुरु पूर्णिमा का भण्डारा भी उसी दिन होगा।
4. **जन्म दिवस शिविरः** 14 से 15 दिसम्बर तक रामायण का अखण्ड पाठ करके 15 दिसम्बर की सायंकाल से 16 दिसम्बर की प्रातःकाल तक अखण्ड जाप होगा। 16 दिसम्बर को दिन में 10:00 बजे हवन तथा 2 बजकर 10 मिनट पर जन्म दिन का भोग लगेगा। शाम को भजन सन्ध्या और प्रसाद के डिब्बों का वितरण होगा। दोपहर को भण्डारा तथा रात्रिकालीन भोजन यथावत किया जायेगा। 17 दिसम्बर का नाश्ता भी यथावत कैटरर द्वारा होगा। शिविर 18 से 21 दिसम्बर तक होगा तथा सजावट इत्यादि भी पूर्ववत कराई जायेगी।

   7 दिसम्बर को माँ सुमित्रा का भण्डारा तथा ब्राह्मण भोज यथावत किया जायेगा।
5. **दिगोली शिविरः** प्रत्येक वर्ष के मार्च महीने में सुविधानुसार तिथियाँ निश्चित करके शिविर का कार्यक्रम साधकों को सूचित किया जायेगा।

II. दिगोली तपस्थली में अब तक के हुए निर्माण कार्य की प्रगति अध्यक्ष महोदय द्वारा सदस्यों को बताई गई जिस पर सभी ने सन्तोष व्यक्त करते

हुए अध्यक्ष जी व उपाध्यक्ष जी के प्रयासों की सराहना की व शेष कार्यों की पूर्ति हेतु निर्माण समिति को अधिकृत किया गया।

III. धाम के भवन में पुताई एवं मरम्मत के कार्य हेतु श्री अनिल मित्तल, श्री हरपाल सिंह राजपूत, श्री सुधीर कान्त अग्रवाल, श्री अनिरुद्ध अग्निहोत्री तथा श्री रवि कान्त भण्डारी को संयुक्त रूप से अधिकृत किया गया।

IV. दिगोली तपस्थली में प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति एवं अन्य सहायता उपलब्ध कराने के लिये सभी सदस्य सहमत हुए। इस हेतु सुयोग्य छात्रों का चयन करने के लिये अध्यक्ष महोदय को अधिकृत किया गया।

V. साधना धाम में समुचित प्रबन्धन हेतु श्री सुधीर कान्त अग्रवाल जी को सर्वसम्मति से सहायक प्रबन्धक नियुक्त किया गया।

VI. अनुमानित तुलन-पत्र की एक-एक प्रति समस्त उपस्थित सदस्यों को उपलब्ध कराई गई।

VII. पूर्व अनुमत प्रस्ताव के अनुसार दिगोली तपस्थली के निर्माण हेतु एक लाख रुपये अथवा इससे अधिक की राशि के दानकर्ताओं का सामूहिक तथा पाँच लाख व अधिक की राशि के भेंटकर्ताओं का व्यक्तिगत नाम का पत्थर लगाने के लिये निम्नलिखित निर्णय लिये गये -

क. दानदाता से सम्पर्क करके अधिक से अधिक विवरण तथा पत्थर लगाने के स्थान (दिगोली अथवा साधना धाम) की सहमति ली जायेगी।

ख. सहमति के उपरान्त 1 अप्रैल 2022 से 30 अप्रैल 2023 तक के दानदाताओं के नाम का साधना धाम अथवा दिगोली तपस्थली में पत्थर लगाना सुनिश्चित किया जाये। इस कार्य के लिये 31 मई 2023 तक की समय-सीमा निश्चित की गई तथा श्री अनिल मित्तल एवं श्री हरपाल सिंह राजपूत जी को इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये नियुक्त किया गया।

VIII. पिछली बैठक से अब तक धाम में निम्नलिखित साधकों के निधन की दु:खद सूचना प्राप्त हुई है -

1. श्रीमती वीणा भण्डारी
2. श्री अमित कुमार मिश्र
3. श्रीमती विजय लक्ष्मी जायसवाल
4. श्रीमती मुनिया मिश्र
5. श्री राम बहादुर (सेवादार)
6. श्री कृष्णा जायसवाल

कार्यसमिति ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत साधकों की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की। इसके पश्चात पूज्य गुरुदेव को भोग लगाकर बैठक की पूर्ति की गई।

अध्यक्ष **कार्यवाहक सचिव**

❖ ❖ ❖

आम सभा की बैठक की कार्यवाही

दिनांक 20.04.2023 को आम सभा की वार्षिक बैठक का आयोजन श्री विष्णु कुमार जी गोयल की अध्यक्षता में साधना धाम हरिद्वार के प्रांगण में किया गया जिसमें 62 साधक उपस्थित रहे। इस बैठक में कार्यकारिणी के सदस्य श्री सुधीर कान्त जी अग्रवाल के द्वारा पिछली आम सभा की बैठक के पश्चात आयोजित की गई निम्नलिखित सभी कार्यकारिणी की बैठकों में पारित प्रस्ताव पढ़कर सुनाये गये जो ध्वनिमत से इस बैठक में सभी सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से पास किये गये।

कार्यकारिणी की बैठकों की सूची -

1. दिनांक 21.04.2022 2. दिनांक 04.06.2022
3. दिनांक 12.07.2022 4. दिनांक 13.07.2022
5. दिनांक 17.12.2022 6. दिनांक 18.04.2023

सभा के अन्त में अध्यक्ष जी ने सभी उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद देकर विदा किया।

दिगोली तपस्थली शिविर

(11 से 15 मार्च 2023)

दिगोली शिविर में भाग लेने के इच्छुक 65 साधक भाई बहन 11 मार्च 2023 की सायंकाल तक दिगोली में पदार्पण कर चुके थे। इतनी बड़ी संख्या में पहली बार दिगोली में साधक एकत्रित हो पाये क्योंकि अब पिछले कुछ महीनों से अध्यक्ष जी व उनकी टीम के अथक परिश्रम के फलस्वरूप दिगोली कुटिया का विस्तार हो चुका है। साधना मन्दिर में बरामदे को मिलाकर बड़ा कर दिया गया है, रसोईघर सहित एक बड़े भोजनालय का निर्माण किया गया है, एक कमरा ऊपर की मंजिल में भी बन रहा है।

11 मार्च 2023 को शयन से पूर्व शिविर को विधिवत चलाने के लिये डयूटियाँ लगाई गईं और दिनांक 12 मार्च 2023 से प्रातः 6:00 बजे से सायं 7:00 बजे तक अखण्ड जाप चलता रहा जिसमें 4 बार सामूहिक जाप होता था। दिनांक 13 मार्च 2023 को स्थानीय विद्यालय के विद्यार्थियों के बीच गीता की सस्वर पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उनमें जूनियर व सीनियर बच्चों के दो भाग करके 6 बच्चों को पुरस्कार दिये गये।

अगले दिन 14 मार्च 2023 को स्थानीय विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा अन्य स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों को आमन्त्रित करके भण्डारा किया गया जिसमें लगभग 300 व्यक्तियों को भोजन कराया गया। भोजनोपरान्त 120 विद्यार्थियों को सेखड़ी परिवार द्वारा थर्मस बोतल व लंच बॉक्स भेंट किये गये। 15 मार्च 2023 को शिविर की विधिवत पूर्ति करके रास्ते का भोजन देकर सभी साधकों को विदा किया गया। इस बीच 11 व 14 मार्च 2023 की सायंकाल में स्थानीय कीर्तन मण्डली ने मन्दिर में संकीर्तन करके गुरु महाराज को प्रसन्न किया क्योंकि स्वामी जी को संकीर्तन बहुत पसन्द था। गुरुदेव की असीम कृपा से शिविर की पूरी अवधि में राम नाम का स्पन्दन प्रवाहित होता रहा और साधकों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा।

दिगोली तपस्थली का संक्षिप्त इतिहास

नये साधकों की जानकारी के लिये बता दें कि यह वही दिगोली तपस्थली है जो अब तक दिगोली कुटिया के नाम से जानी जाती रही है तथा जिसमें गुरुदेव महाराज ने दिगोली ग्राम के तीन नवयुवकों – सर्वश्री वंशीधर, केशव दत्त जोशी और चक्रधर जोशी के आग्रह पर नवरात्रों में गुरुवार दिनांक 27 मार्च 1941 को पदार्पण किया था और जहाँ एक फुट ऊँचे पत्थर पर बैठ कर छः माह तक भागवत कथा के प्रवचन से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया था। उस पवित्र पत्थर को आज भी आश्रम में संभाल कर रखा हुआ है।

यह वह स्थान है जहाँ से स्वामी जी की सतत साधना प्रारम्भ हुई थी। यह स्थान स्वामी जी को बहुत प्रिय था। इधर-उधर भ्रमण करने के पश्चात् वे दिगोली लौट आते थे। दिगोली को गुरुदेव अपना मायका कहा करते थे। स्वामी जी के दिगोली आने से पूर्व उस स्थान पर माँ भागवती का एक साधारण सा प्राचीन मन्दिर था जो अच्छी हालत में नहीं था। वह मन्दिर आज भी वहीं है किन्तु उसका जीर्णोद्धार साधना परिवार द्वारा करवाकर उसको सुन्दर रूप प्रदान कर दिया गया है। प्राचीन जर्जर धर्मशाला को गिरवाकर साधना कक्ष, भण्डारगृह, रसोईघर, बरामदा तथा त्रिभुजाकार घास का लान बनवा दिया गया था जिसमें स्वामी जी के अनन्य भक्त स्वर्गीय श्री काशी नाथ जी मित्तल एवं उनके सुयोग्य पुत्रों, विशेषकर श्री अनिल जी मित्तल का विशिष्ट योगदान रहा। वे वर्ष में कई बार आश्रम में पधार कर यथाविधि पूजन, भजन, कीर्तन तथा अखण्ड जाप का आयोजन करते

रहते हैं। श्रद्धेय बाबूराम जी ने यहाँ रहकर अपनी देखरेख में सारा कार्य सम्पन्न कराया था।

भवन के आधुनिक रूप के विस्तार का इतिहास

भवन के विस्तारीकरण एवं जीर्णोद्धार के बारे में सर्वप्रथम विचार विमर्श तब किया गया जब सन् 2000 में तत्कालीन नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सेखड़ी, सचिव श्री आर.एन. शर्मा, बीसलपुर से श्री विष्णु कुमार गोयल व श्री प्रदीप मित्तल जी दिगोली गये थे। उस विचार को कार्यान्वित करने का दायित्त्व श्री विष्णु कुमार गोयल को दिया गया जिसके फलस्वरूप अल्मोड़ा के तुलसी ट्रेडर्स के सहयोग से एक छोटा रसोईघर, एक 15' x 15' का कमरा, दो शौचालय व दो स्नानागार धरातल पर तथा एक कमरा, दो शौचालय, दो स्नानागार व एक छोटे भण्डारगृह का निर्माण प्रथम तल पर किया गया। इसमें श्री कृष्ण अवतार व श्री हर नारायण जी का सहयोग भी मिला था।

दूसरे चरण में श्री सेखड़ी जी के निर्देशानुसार श्री के.सी. अग्रवाल जी की देखरेख में 15' x 23' के एक कमरे का निर्माण धरातल पर तथा उसके ऊपर प्रथम तल पर किया गया। साथ ही दो शौचालयों व एक स्नानागार का निर्माण भी किया गया।

अब तीसरे चरण में वर्तमान अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार गोयल जी के प्रयासों से जो अतिरिक्त निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है उसके फलस्वरूप 42' x 20' का रसोईघर एवं भोजनालय, उसके बाहर तीन तरफ 5' की गैलरी, 4' का खुला बरामदा, दो शौचालय, एक स्नानागार, उसकी छत पर जाने के लिये एक सीढ़ी, मन्दिर में नवीन सिंहासन तथा हॉल को विस्तार करके 22' x 24' का बनाया गया है जिसमें 65 साधक एक साथ बैठकर सामूहिक जाप कर सकें। साथ ही मन्दिर के बाहर 28' x 9' का बरामदा भी बनाया गया है जिसकी छत पर बैठकर साधकगण वादियों के मनोरम दृश्यों का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त तपस्थली में 75 बिस्तर, 30 चारपाईयाँ, मन्दिर में गद्दे, चादर, गलीचे आदि व भोजन के लिये 75 स्टील के थाल, उपयुक्त मात्रा में स्टील के गिलास, कटोरियाँ, चम्मच, चाय के लिये कप, भोजन परोसने के बर्तन, बर्तन साफ करने के लिये आधुनिक सिंक आदि सभी सुविधायें साधक भाई बहनों के सहयोग से उपलब्ध हैं। बिजली की आपूर्ति सौर ऊर्जा संयन्त्र द्वारा पहले ही की चुकी है। इन्वर्टर भी लगा हुआ है। पीने के पानी के लिये फिल्टर तथा स्नान के लिये गर्म पानी की टंकी की भी उचित व्यवस्था है। सभी कमरों में पंखे व ट्यूब लाइट लगे हुए हैं।

कुल मिलाकर वर्तमान में तपस्थली को एक सुन्दर आश्रम का रूप दे दिया गया है जो शिविर के अतिरिक्त भी श्रद्धालु साधकों व स्थानीय जनता के लिये आकर्षण का केन्द्र है।

आश्रम की स्थिति

दिगोली तपस्थली आश्रम एक पहाड़ी पर ग्राम दिगोली डाकघर बाड़ेछीना जनपद अल्मोड़ा में स्थित है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 4500 फीट है जबकि अल्मोड़ा की ऊँचाई 5210 फीट है। हल्द्वानी से अल्मोड़ा 96 किलोमीटर है तथा अल्मोड़ा से दिगौली लगभग 20 किलोमीटर है।

लखुड़ियार का शैलाश्रय

यह शैलाश्रय एक दृष्टव्य स्थान है। साधना परिवार के लिये इस स्थान का विशेष महत्त्व है। दिगोली में स्वामी जी प्रात:काल ध्यान के पश्चात 5:30 बजे घूमने जाते, नीचे नदी में स्नान करते और अपने कपडे स्वयं धो लेते। इन कार्यों से निपट कर वह निकटवर्ती पहाड़ी पर स्थित एक गुफा में ध्यान करते थे। यह गुफा ही शैलाश्रय है। गुफा आम धारणा के अनुसार कोठरीनुमा न होकर उलटे सूप के समान बाहर निकली हुई एक पहाड़ी है जिसका आधार आगे

की ओर कुछ भी नहीं है। यह बालकनी की भाँति टँगी है। इसकी छत के नीचे केवल 5-6 लोगों के बैठने का ऊँचा नीचा स्थान है। सामने की ओर खुला आकाश है, नीचे की ओर कल-कल बहती हुई नदी है। इसी नदी में स्वामी जी नित्य स्नान करते थे, फिर इसी खोह में बैठकर ध्यान किया करते थे।

यह स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसकी महत्ता को देखकर सरकारी पुरातत्त्व विभाग ने इसे अपने अधिकार में ले लिया है और अब वही विभाग इसकी देखभाल करता है। इस गुफा के विषय में ऐसी जानकारी मिली है कि छत पर लाल, काले व सफेद रंगों से पंक्तिबद्ध मानवों, पशु, वृक्ष आदि के चित्र बनाये गये थे जो समय के अन्तराल से अब धूमिल हो गये हैं। शैलाश्रय की छत के ऊपरी तल में छत के बीचों-बीच चीड़ का एक बहुत ऊँचा वृक्ष एकाकी खड़ा हुआ है। शैलाश्रय रंगीन पर्तदार पत्थरों का बना हुआ है।

हम साधकों के लिये यह स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसे स्वयं गुरुदेव महाराज ने ध्यान लगाने के लिये चुना था। इसीलिये जो साधक दिगोली जाते हैं वे वहाँ 10 मिनट बैठकर ध्यान लगाते हैं।

गुरु महाराज की दूरदर्शिता का अनुमान लगाना सहज नहीं है। पिछले सात दशक पूर्व किसी ने दिगोली के इस रूप की कल्पना भी न की होगी और न ही भविष्य में होने वाले विकास की कर सकते हैं।

❖ ❖ ❖

मैं 'मैं' हूँ

सुकरात समुद्र तट पर टहल रहे थे। उनकी नजर तट पर खड़े एक रोते बच्चे पर पड़ी।

वो उसके पास गये और प्यार से बच्चे के सिर पर हाथ फेरकर पूछा, – 'तुम क्यों रो रहे हो?'

लड़के ने कहा – 'ये जो मेरे हाथ में प्याला है, मैं उसमें इस समुद्र को भरना चाहता हूँ पर यह मेरे प्याले में समाता ही नहीं।'

बच्चे की बात सुनकर सुकरात विशाद में चले गये और स्वयं रोने लगे।

अब पूछने की बारी बच्चे की थी।

बच्चा कहने लगा – 'आप भी मेरी तरह रोने लगे पर आपका प्याला कहाँ है?'

सुकरात ने जवाब दिया – 'बालक, तुम छोटे से प्याले में समुद्र भरना चाहते हो, और मैं अपनी छोटी सी बुद्धि में सारे संसार की जानकारी भरना चाहता हूँ। आज तुमने सिखा दिया कि समुद्र प्याले में नहीं समा सकता है, मैं व्यर्थ ही बेचैन रहा।'

यह सुनके बच्चे ने प्याले को दूर समुद्र में फेंक दिया और बोला – 'हे सागर, अगर तू मेरे प्याले में नहीं समा सकता तो मेरा प्याला तो तुम्हारे में समा सकता है।'

इतना सुनना था कि सुकरात बच्चे के पैरों में गिर पड़े और बोले – 'बहुत कीमती सूत्र हाथ में लगा है। हे परमात्मा! आप तो सारा का सारा मुझ में नहीं समा सकते पर मैं तो सारा का सारा आप में लीन हो सकता हूँ।'

ईश्वर की खोज में भटकते सुकरात को ज्ञान देना था तो भगवान् उस बालक में समा गए।

सुकरात का सारा अभिमान ध्वस्त कराया। जिस सुकरात से मिलने के लिये सम्राट समय लेते थे वह सुकरात एक बच्चे के चरणों में लोट गये थे।

''ईश्वर जब आपको अपनी शरण में लेते हैं तब आपके अन्दर का 'मैं' सबसे पहले मिटता है। या यूँ कहें जब आपके अन्दर का 'मैं' मिटता है तभी ईश्वर की कृपा होती है।''

भीतर के 'मैं' का मिटना जरूरी है।'

संकलित

श्री गुरुदेव निर्वाण-दिवस साधना शिविर-2023
(14 से 21 अप्रैल 2023) - विवरण एवं प्रवचन सार

निर्वाण दिवस साधना शिविर का विधिवत शुभारम्भ दिनांक 15 अप्रैल 2023 को अपराह्न की सभा में ड्यूटियाँ लगाकर किया गया। इससे पूर्व सदा की भाँति दिनांक 14 अप्रैल की रात्रि को अखण्ड जाप का आयोजन किया गया। 15 अप्रैल को प्रातः काल 5:50 बजे गंगा घाट पर जाकर सभी उपस्थित साधकों ने गुरुदेव को पुष्पांजलि अर्पित की। उसके उपरान्त भजन व श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मध्याह्न में 11 ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित ब्रह्मभोज कराया गया।

शिविर में 61 साधक उपस्थित रहे। शिविर की अवधि में बहन रेवा भाम्बरी जी के नेतृत्व में योग प्राणायाम की कक्षाओं का आयोजन भी नियमित रूप से किया गया।

श्री शिव कुमार जायसवाल जी

वरिष्ठ साधिका श्रीमती सुशीला जायसवाल जी के सुपुत्र श्री शिव कुमार जी ने अपने प्रवचन में गीता के अध्याय 10 के श्लोक 9 व 10 की व्याख्या की।

मच्चित्ताः मद्गतप्राणः बोधयन्तः परस्परं।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥

मेरे भक्त मेरे में मन को अर्पित कर देते हैं। शरीरगत, इन्द्रियगत, मनोगत और बुद्धिगत चेतना को भी मुझ में नियोजित कर देते हैं। परस्पर जब दो भक्त मिलते हैं तो एक दूसरे को ज्ञान और भक्ति के प्रकाश से वैसे ही प्रकाशित करते हैं जैसे दो दीपक एक दूसरे के तल का अँधेरा दूर करते हैं। वे आपस में मेरी चर्चा करते हुए अघाते नहीं हैं। वे मुझमें ही रमण करते हैं अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि को मेरा ही स्वरूप मानते हैं तथा सब प्रकार से सन्तुष्ट रहते हैं। मेरा भक्त त्याग का भी त्याग कर देता है। अर्थात मेरा भक्त सांसारिक वस्तुओं का त्याग भी सहज में करता है और यदि उन्हें पुनः बरतने की बात आये तो सहजता से अपना भी लेता है। वह भौतिक वस्तुओं को ईश्वर प्राप्ति का साधन मात्र मानता है। न उसकी रुचि उनको छोड़ने में है और न पकड़ने में ही।

मेरा भक्त नाम के तन्तु से सदा ही मुझसे जुड़ा रहता है। स्वामी जी ने लिखा है कि नाम का तन्तु दग्ध कर देता है साधक के सारे कुसंस्कारों को। यह साधक और नामी के बीच सिर्फ सम्बन्ध ही नहीं स्थापित करता वरन उसको दृढ़ करता चला जाता है। नाम में नामी के सभी गुण समाये होते हैं जो नाम जप से साधक में सहज ही उतरते चले जाते हैं। मैं राम नाम से बेहतर साधन कोई दूसरा नहीं जानता। राम नाम अपने में सम्पूर्ण साधन है।

राम नाम छाड़ि जो भरोसो करे और रे।
तुलसी परोसो छाड़ि मांगे कूर कौर रे॥

अगले श्लोक में कृष्ण भगवान् ने गीता में कहा -

तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकं।
ददामि बद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

इसलिये हमें राम नाम का निरन्तर जाप करना चाहिये।

मन का मनका फेरि गुहारो राम राम श्री राम नमः
मौन भाव लय लाय उचारो राम राम श्री राम नमः
लाय लाय जपि खूब विचारो राम राम श्री राम नमः
जपत नाम नर योनि सुधारो राम राम श्री राम नमः
सत चित आनन्द ज्ञान अगारो राम राम श्री राम नमः
दे प्रसाद प्रभु भव निधि तारो राम राम श्री राम नमः।

हमारे शरीर में कफ-वात-पित्त के असुन्तलन से

सभी रोग होते हैं। राम नाम र+अ+म से मिल कर बना है जिसमें अग्नि+सूर्य+चन्द्रमा के गुण समाये हैं। यह जाप सहज में ही अपने वर्णों के प्रभाव से कफ-वात-पित्त में सन्तुलन स्थापित करता है और हमें शारीरिक रोगों से बचाता है। हम जब राम नाम का जाप करते हैं तो शरीर का बिखरा हुआ चुम्बकत्व एक दिश हो जाता है जिसका उत्तरी ध्रुव सहस्रार और दक्षिणी ध्रुव मूलाधार होता है। इससे साधक में दैवीय सम्पदा के लक्षण सहज में उतर आते हैं। ये लक्षण साधक को प्रभु से मिलाने में सहायक होते हैं।

बहन कुसुम माहेश्वरी जी - दो सत्र

बहन कुसुम माहेश्वरी शिविर में उपस्थित होने के लिये मुम्बई से आई थीं । इन्होंने दो प्रवचन दिये जिनका सार नीचे दिया जा रहा है -

- गुरुदेव महाराज ने गीता को जीवन में उतारा था और बताया था कि हम दूसरों के लिये अधिक से अधिक उपयोगी कैसे हो सकते हैं।
- पूज्य गुरुदेव ने ध्यान पर बहुत बल दिया था क्योंकि ध्यान से हमारा अन्त:करण निर्मल होता है।
- शरीर नश्वर है, इसलिये राम नाम का जाप सतत चलते रहना चाहिए।
- स्वयं को प्रभु से जोड़े रखना है। ऐसा करने से हमारा आध्यात्मिक विकास तेजी से होता है। हमारा स्वरूप सत चित आनन्द है। हमारे भीतर ज्ञान, भाव तथा क्रिया की जो अनन्त शक्तियां छुपी हुई हैं, प्रभु से युक्त हुए रहने से उनका विकास होता है।
- प्रकृति से जो कर्ज़ लिये हैं उनको सेवा द्वारा चुकाना होगा।
- हमें अन्तर्मुखी होकर आत्मनिरीक्षण करना होगा जिससे हमें अपनी कमियाँ पता लगें और उन्हें हम दूर कर सकें।
- जब हम स्वयं सुधरते हैं तो उसका प्रभाव समाज पर पड़ता है।
- गीता के श्लोक 3.39 में बताया गया है कि हमें कभी तृप्त न होने वाली कामनाओं के वश में नहीं होना है क्योंकि ये ज्ञानियों की नित्य वैरी हैं, इनकी पूर्ति न होने से क्रोध उत्पन्न होता है।
- जो प्रभु से युक्त होता है वह दु:ख और सुख को भगवान् से प्राप्त प्रसाद समझकर ग्रहण करता है और हर परिस्थिति में प्रसन्न रहता है। वह दूसरों की त्रुटियों की अनदेखी करता रहता है।

बहन शशि वाजपेई जी - दो सत्र

गुरुदेव महाराज ने कहा है परमात्मा को प्राप्त करना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पूरा जीवन ही साधनामय बनाना होगा। गीता के श्लोक 18.56 की व्याख्या करके समझाया कि पारिवारिक व सामाजिक सभी कर्तव्य कर्मों को भगवान् की सेवा और पूजा के लिये ही करना चाहिए। दूसरों के लिये तन, मन, धन से जो भी हो सके, निष्काम भाव से किया गया कर्म यज्ञ हो जाता है। यज्ञ के अतिरिक्त किये गये सभी कर्म बन्धन के कारण होते हैं। आसक्ति को छोड़कर सभी कर्म भगवान् के लिये किये जाएं तो कर्त्ता संसार में रहकर भी ऐसे निर्लिप्त रहता है जैसे कमल का पत्ता जल में रहकर।

बहन शशि ने आगे बताया कि हमारी साधना भक्ति मार्ग की है। भक्त सर्वत्र परमात्मा के दर्शन करता है, भगवान् के नाते से सभी से प्रेम करता है, प्रत्येक कार्य के आरम्भ में, मध्य में और अन्त में भगवान् को याद रखता है। पूज्य गुरु महाराज ने कहा है कि रामपद में रमण का नाम से बढ़कर मैं कोई और साधन नहीं जानता हूँ। यही दिव्य राम नाम का मन्त्र देकर हमें गुरु महाराज ने कृतार्थ किया है, उससे हमें हर समय युक्त रहना है क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है, कोई नहीं जानता

कि अगली साँस आएगी या नहीं -

क्षणभंगुर जीवन की कलिका
कल प्रात को जाने खिली न खिली।
मलयाचल की शुचि शीतल मन्द
सुगंध समीर चली न चली ॥

दूसरे सत्र में बहन शशि ने गुरुदेव महाराज के समझाये हुए छोटे-छोटे नुस्खे बताये - साधन भजन में सबसे बड़ी वस्तु है भगवान् पर जीवित विश्वास, सतत अवतरित होने वाली कृपा का भरोसा तथा सर्वस्व का समर्पण। ज्यों ज्यों चेतना जागृत होती है वैसे ही सभी कुछ होता चला जाता है। हमारी साधना व्यावहारिक साधना है। जैसा व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं वैसा हम स्वयं दूसरों के साथ करें।हमें आसक्तिरहित प्रेम करना चाहिये। यदि हम दुखी नहीं होना चाहते हैं तो कोई हमें दुखी नहीं कर सकता।

प्रत्येक प्राप्त वस्तु का सदुपयोग करें, दुरुपयोग कदापि न करें। यदि दुरुपयोग करते हैं तो भगवान वह वस्तु हम से छीन लेते हैं। पावन प्रेम की जगी हुई अग्नि दग्ध कर देती है साधक के सभी कुसंस्कारों को। जो हमें प्राप्त है उसमें हमें प्रसन्न रहना चाहिये। जब हमारा समर्पण होता जाता है तो हम शान्त और सम होते चले जाते हैं। सुखी रहने का स्वर्ण सूत्र है - मुख मंडल पर मधुर मुस्कान, हृदय में गूंजता हुआ राम नाम और मुख में प्रेम भरी वाणी। सुख में भगवान् को धन्यवाद देना और दु:ख में समझना चाहिए कि भगवान् हमारे संस्कारों को क्षीण कर हमें निर्मल कर रहे हैं।

बहन मीना बिजलवान जी

रामहि केवल प्रेम पियारा।
जान लेहु जो जाननि हारा॥

जब हम किसी से प्रेम करते हैं या किसी की सेवा करते हैं तो हज़ारों हाथ हमारे लिये खड़े हो जाते हैं। जो हम दूसरों को देते हैं वही लौटकर हमें मिलता है। एक भजन में आता है - जो पेड़ हमने लगाया पहले, उसी का फल हम अब पा रहे हैं। जब हम रामायण आदि अच्छा साहित्य पढ़ेंगे तो समझ में आएगा कि एक भगवान् ही सत्य है, संसार मिथ्या है। कोई अच्छा कार्य करने का विचार मन में आये तो उसे तुरन्त कर डालो। प्रसन्न वही रह सकता है जिसके अन्दर प्रश्न न हो। हमारी नज़र चार प्रकार की होती है - अहंकारी, बुराई देखना, कमियाँ देखना, भगवान् को देखना या चिन्तन करना। अपने को सरल करना कठिन है। प्रभु प्राप्ति के लिये पाँच सीढ़ी हैं - त्याग, प्रार्थना, प्रयास, प्रतीक्षा और प्रसाद। रामायण में नवधा भक्ति का चित्रण किया गया है। इनमें से एक भक्ति भी जीवन में उतर जाये तो भगवान् प्राप्त हो जाते हैं।

श्रीमती सुशीला जायसवाल जी - दो सत्र

गीता श्लोक 18.26 में सात्त्विक कर्त्ता के छ: लक्षण बताये गये हैं, इनमें से तीन से रहित होना है - आसक्ति, अहंकार और हर्ष शोकादि विकार; दो से युक्त होना है - धैर्य और उत्साह; एक में सम रहना है - कार्य के सिद्ध होने और न होने में। पहले अप्राप्त को प्राप्त करने की कामना होती है, फिर प्राप्त की सुरक्षा के लिये प्रयासरत रहता है। सात्त्विक कर्त्ता इनसे रहित होता है। राग रजोगुण से उत्पन्न होता है। जब हम किसी व्यक्ति या वस्तु को अपना मान लेते हैं तो राग होता है। जो कुछ हमें प्राप्त है सब भगवान् का मानना है। अपने में यदि कोई विशेषता दिखती है तो उसे भगवान् की ही विशेषता समझना है। कार्य की सिद्धि हो या न हो, दोनों ही स्थितियों में सम रहना है, क्योंकि फल तो भगवान् के ही हाथ में है। हमारे हित में होगा तभी भगवान् उस कार्य को सिद्ध करेंगे अन्यथा नहीं। हर्ष और शोक, ये दोनों ही विकार की श्रेणी में आते हैं। जैसे भगवान् रखे वैसे ही रहना, सात्त्विक कर्त्ता की पहचान है।

पहले सत्र में हुई सात्त्विक कर्त्ता के प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए दूसरे सत्र में राजसिक कर्त्ता के लक्षण समझाये।

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्त्ता राजसः परिकीर्तितः॥
(गीता 18.27)

अर्थात जो कर्त्ता रागी, कर्मफल की इच्छा वाला, लोभी स्वभाव वाला, अशुद्ध और हर्ष शोक से युक्त है वह राजस कहा गया है। संसार के भौतिक पदार्थों में लगा हुआ संसार के भोगों को ही चाहता है। रजोगुण और तमोगुण आसुरी सम्पदा हैं। राग नहीं होना चाहिए, अनुराग होना चाहिए -

या अनुरागी चित्त की गति समझे नहिं कोय।
ज्यों ज्यों डूबे श्याम रंग त्यों त्यों उज्ज्वल होय।

कर्मफलप्रेप्सु - कर्मफल की इच्छा वाला - मान सम्मान आदि फल को पहले जोड़ लेता है। वह बन्धन का कारण होता है। कर्म करने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि कोई भौतिक कामना तो नहीं।

लोभी - जो भी प्राप्त है वह और बढ़ता जाए। और सुख भोग की लालसा में लगा रहता है।

हिंसात्मक - धन प्राप्ति में, स्वार्थ सिद्धि के लिये किसी तरह की भी हिंसा करने को तत्पर रहता है।

अशुद्धि - राजसी कर्त्ता की बुद्धि अशुद्ध रहती है।

हर्षशोकान्वितः - हर्ष खुशी चाहता है, शोक प्रतिकूलता से दूर भागता है, जबकि सुख दुःख मन के कार्य हैं। ऐसा कर्त्ता राजसी कर्त्ता कहा जाता है।

तामसी कर्त्ता के लक्षण - गीता 18.28

अयुक्त - पूरा जीवन - बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था तक भगवान् से युक्त नहीं होता। संसार में ही प्रवृत्त रहता है, भोग-संग्रह में ही लगा रहता है।

स्तब्ध - ऐंठ वाला, जो झुकना तो जानता ही नहीं। देखने, सुनने, बोलने में वह ऐंठन से भरा रहता है। उसे सही या गलत का तो भान ही नहीं होता। अपनी बात को ही मान्यता देता है, ज़िद्दी स्वभाव वाला होता है।

नैष्कृतिक - उपकारी का उपकार न मानने वाला।

आलसी और विषादी - जो करणीय है वह नहीं करता है, न करने वाले कार्य को करता है।

दीर्घसूत्री - समय अधिक लेता है। जो कार्य छोटे हैं वह अधिक समय तक करता रहता है। सात्त्विक कर्त्ता इसके विपरीत होता है, वह आज के काम को कभी कल पर नहीं छोड़ता।

जीवन बहुत मूल्यवान है। हमें हर श्वास का ध्यान रखना चाहिए और तामसी और राजसी को पहचानना चाहिए, कहीं ये हमारे अन्दर घर तो नहीं कर रहे हैं।

बहन कुसुम सिंह जी - दो सत्र

बहन कुसुम सिंह ने गीता के अध्याय 6 श्लोक 40 की व्याख्या करते हुए बताया कि श्री भगवान् ने अर्जुन को समझाया कि आत्म कल्याण की चेष्टा करने वाले की कभी दुर्गति तो होती ही नहीं है, न इस लोक में और न मरणोपरान्त। कल्याण का अर्थ है आध्यात्मिक उन्नति, मोक्ष की प्राप्ति, भगवान् की प्राप्ति। आध्यात्मिक उन्नति के लक्षण हैं - बढ़ती हुई समता, शान्त होते हुए काम, क्रोध आदि विकार और विकसित होता हुआ प्रेम। मोक्ष है जीते जी अवगुणों से मुक्त हो जाना और भगवान् की प्राप्ति तो हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य है ही। हमारे सभी क्रिया कलापों, सत्संग, स्वाध्याय, मनन का एकमात्र लक्ष्य भगवान् की प्राप्ति ही होना चाहिए। हमारे भक्ति मार्ग की अनेक विशेषताएं हैं जिनमें से छः यहाँ बताई जा रही हैं -

1. इस मार्ग में पतन की सम्भावना नहीं है। यदि कोई पुरातन संस्कार आ गया हो तो उसे क्षीण करके ही हम आगे बढ़ पाते हैं।
2. इस मार्ग में बलात संयम की आवश्यकता नहीं है। घर गृहस्थी में रहकर संयम स्वतः होता जाता है।

सहज पके सो मीठा होय - ज़बरदस्ती के संयम से विस्फोट की सम्भावना बनी रहती है।

3. संघर्ष का अवसर नहीं - सहज सरल तरीके से सभी कुछ होता चला जाता है। भक्त तो प्रभु से जो भी प्राप्त है उसे ही स्वीकार करता है। इसमें संघर्ष का तो स्थान ही नहीं है।
4. वासना का भार नहीं।
5. रुकने की सज़ा नहीं।
6. दुर्गति का प्रश्न नहीं।

व्यावहारिक साधना में बहन कुसुम सिंह ने निम्नलिखित आवश्यक बातें बताईं -

1. **मन्त्र** - मन्त्र ऐसा होना चाहिये जिसके उच्चारण करने से सूक्ष्म क्रिया अधिक वेग से होने लगे। अपने गुरुदेव के द्वारा दिया गया मन्त्र अधिक प्रभावशाली होता है।
2. **आकार और ध्येय** - भावों को जागृत करने के लिये आकार का उपयोग लाभकारी होता है, परन्तु आकार बना ही रहे ऐसा यत्न नहीं करना चाहिए।
3. **ध्यान केन्द्र** - अन्य मार्ग में नासिका के अग्रभाग या भ्रूमध्य में ध्यान लगाते हैं, हमारे यहाँ ऐसा नहीं है, जबरन ध्यान केन्द्रित नहीं करना है।
4. **धारणा** - साधन में बैठने से पूर्व, धारणा बनाना, भगवान् का चिन्तन, भावपूर्ण भजन, प्रार्थना तथा नमस्कार सप्तक के द्वारा धारणा बनाने का यत्न करना चाहिये, भगवान् की समीपता की प्रतीति करनी चाहिये।
5. **माला** - माला का उपयोग जाप में तीव्रता बढ़ाने के लिये किया जाता है। जाप का क्रम न टूटे इसलिये भी माला प्रयोग करते हैं प्रारम्भिक अवस्था में। धीरे धीरे माला छूट जाती है, कोई फर्क नहीं पड़ता है।
6. **जाप** - जाप चार प्रकार के बताये गये हैं - 1. वाचिक, 2. उपांशु (जिसमें होंठ हिलते हैं)। 3. मानसिक जाप, 4. अजपा जाप - यह मानसिक से सौ गुणा फलदायी होता है।
7. **सतत स्मरण** - सुबह शाम के अतिरिक्त घर गृहस्थी के सभी काम करते हुए भगवान् का सतत स्मरण चलते रहना चाहिए।
8. **समय** - जो समय निर्धारित किया हो उसी समय पर हमें जाप करना चाहिए। सुबह ब्रह्म मुहूर्त तथा सन्ध्या समय जाप के लिये उत्तम समय रहता है।
9. **स्थान** - जाप के लिये हल्ले गुल्ले से दूर कमरा होना चाहिए। ऐसा करने से उच्च भावों के स्पन्दन से कमरा भर जाता है, मनोवृत्तियां बदल जाती हैं।
10. **आसन** - हमारे मार्ग में सुखासन पर बैठकर पालथी मारकर जप करना बताया गया है। आसन न ऊँचा हो, न अधिक नीचा हो, आरामदायक हो।

गुरुदेव भगवान् ने हमें राम नाम का मन्त्र दिया है। पूरे विश्वास के साथ राम नाम का जप करना चाहिए। कुछ चले या न चले, राम नाम का जाप तो हर समय चलना ही चाहिए।

एहि कलि काल न साधन दूजा।
जोग जग्य जप तप व्रत पूजा।
रामहि सुमरिअ गाइअ रामहि।
संतत सुनिअ राम गुन गावहि।

बहन सुमन जायसवाल जी

भगवान् की असीम कृपा से यह मानव शरीर मिला है। जड़, वनस्पति, पशु आदि निम्न योनियाँ बिताकर हम यहाँ आये हैं। पशु योनि में हम कर्म नहीं कर सकते हैं, मनुष्य योनि में ही कर्म कर सकते हैं। अतः पुरुषार्थ खूब करना है परन्तु फल की इच्छा नहीं करनी है। भगवान् ने गीता 2.47 में कहा है - **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**। हमें निश्चयात्मिक बुद्धि द्वारा सभी कर्म भगवान् की सेवा समझकर करने हैं। निम्न योनियों में हम अपना कल्याण

स्वयं नहीं कर सकते हैं, मनुष्य शरीर में ही यह अवसर हमें प्राप्त हुआ है। हमें इस शरीर का व सभी प्राप्त वस्तुओं का सदुपयोग करना है। हमारी कोई भी वस्तु यदि किसी ज़रूरतमन्द के काम आ सके तो यह हमारी बहुत बड़ी सेवा हो जाती है।

जीवन में अनुकूलता प्रतिकूलता आती जाती रहती है। उन्हें प्रभु की देन समझकर खुशी खुशी स्वीकार करना है। हम प्रकृति के द्वारा किये हुए कार्यों को अपना समझ लेते हैं। निष्काम भाव से, ऊँची भावना से सभी कार्य करने चाहिए। आत्मा परमात्मा से युक्त होना चाहती है। जब हम राम नाम का जप करते हैं या सत्संग करते हैं तो भगवान् से युक्त रहते हैं। हमें हर समय आनन्द की स्थिति में रहना चाहिए। ये सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी सब आने जाने वाले हैं, हमेशा नहीं रहते हैं। समय और शक्ति का खूब सदुपयोग करना चाहिए। हम इसी जन्म में भगवान् की प्राप्ति कर सकते हैं। खूब राम नाम से युक्त रहें।

बहन मीरा दुबे जी

बहन मीरा दुबे ने पत्र पीयूष के पत्र संख्या 36 की ओर ध्यान दिलाया जिसमें गुरुदेव भगवान् ने बताया है कि सुख और शान्ति बहुत कुछ हमारे पर ही निर्भर करती है और गीता के अनुसार बिना शान्ति के सुख नहीं मिल सकता - **अशान्तस्य कुतः सुखं**। गुरुदेव ने आगे बताया है कि व्यक्ति धन या मान से बड़ा नहीं होता है। प्रायः इन दोनों से वह गड्ढे में गिरता है। बड़ा होता है भगवान् के समीप होने से, निर्मल मन होने से, दूसरों की सेवा करने से। इसलिये हमें सभी कर्म करते हुए सेवा कार्य को प्राथमिकता देनी चाहिये। पूज्य मथुरा प्रसाद जी ने भी कहा है -

सेवा साधन वृक्ष है फल है प्रेम प्रसाद।
महाशक्ति अविरल बहे है प्रसाद सतज्ञान।

हमें नित्य निरन्तर भगवान् से जुड़े रहना चाहिये, नित्य का सत्संग करना चाहिये। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है - बिनु सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई। भगवान् की कृपा से ही हमें सत्संग मिलता है। पहले मनुष्य संसार के पदार्थों की माँग करता है। जब भगवान् का बोध होता है, विवेक जागृत होता है तब प्रभु के लिये तड़पता है। भगवान् कहते हैं खूब पुरुषार्थ करो। भगवच्चिन्तन इतना हो कि हमारा देहाभिमान समाप्त हो जाए। राम नाम की महिमा अपार है। खूब विश्वास व लगन के साथ राम नाम का जाप करें।

बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लहि बिश्राम।

बहन पुष्पा गौड़ जी

हम दिन भर कुछ न कुछ कार्य करते हैं। उन सभी कार्यों के फल व संस्कार एकत्रित होते रहते हैं। इसी प्रकार हम दिन के एक भाग में राम का नाम लेने की आदत बना लें। थोड़ा थोड़ा भी राम का नाम लेंगे तो एक दिन वे बड़ा रूप ले लेंगे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हर महीने बैंक के आवर्ती जमा योजना में हम थोड़ी थोड़ी राशि जमा करते हैं तो एक अवधि के पश्चात वह बड़ी राशि का रूप ले लेती है और उसे हम सावधि जमा खाते में जमा कराके ब्याज कमा सकते हैं। इसी प्रकार हमारी पुण्यों की तथा राम नाम की राशि एकत्रित होकर फल देने लगती है।

श्री जगत सिंह जी

हम जब साधना धाम आते हैं तो सन्तों का संग मिलता है। रामायण में नौ प्रकार की भक्तियों में प्रथम भक्ति सन्तों का संग बताई गई है। दूसरी भक्ति भगवान् की कथाओं को सुनना, सुनाना होती है, वह भी यहाँ शिविरों में सुनने को मिलती है। तीसरी भक्ति बताई है गुरु पद पंकज सेवा। गुरु की सेवा अर्थात गुरु

की आज्ञा का पालन। यहाँ आकर हमें याद दिलाया जाता है कि गुरु की आज्ञा क्या है और उनके उपदेशों का पालन करना भी सिखाया जाता है। चौथी भक्ति भगवान् के गुणों का गान बताई गई है। भगवान् के गुणों का गान व स्मरण करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं और उनके गुणों का कुछ अंश हमारे अन्दर भी आ जाता है। पाँचवी भक्ति है गुरु के द्वारा दिये हुए मन्त्र का पूर्ण विश्वास के साथ जप करना। मन्त्र जाप में ही मुक्ति, युक्ति, भक्ति - सभी कुछ समाया है। छठी भक्ति बताई है इन्द्रियों को वश में करना शील स्वभाव को धारण करना और अनेक प्रकार के कार्यों में समय को व्यर्थ न गँवाकर सज्जनों के धर्म का पालन करना।

इस प्रकार श्री रामचरितमानस में वर्णित नवधा भक्ति में से श्री जगत सिंह ने छः प्रकार की भक्तियों की व्याख्या करके अपनी वाणी को विराम दिया।

श्री अजय अग्रवाल जी

श्री रामचरितमानस उत्तरकाण्ड में कथा आती है कि गरुड़ ने काकभुशुण्डि जी से मानस रोग जानने की जिज्ञासा प्रकट की थी जिसके उत्तर में काकभुशुण्डि जी ने कहा था -

सुनहु तात अब मानस रोगा।
जिन्ह ते दुःख पावहिं सब लोगा।
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला।
तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला॥
अहंकार अति दुखद डमरुआ।
दम्भ कपट मद मान नेहरुआ।

अहंकार माया का रूप है। नारद जी को भी अहंकार हो गया था जब उन्होंने अपनी तपस्या के बल से कामदेव को जीत लिया था जिसका बखान उन्होंने अहंकारवश होकर शंकरजी से कर दिया। शंकर जी ने उनको यह बात विष्णुजी से न कहने का परामर्श दिया जो नारद जी को अच्छा नहीं लगा क्योंकि वह श्रवणेन्द्रिय के वश हो गये थे जो अपनी प्रशंसा सुनने के लिये लालायित थी। विष्णु भगवान ने नारद जी के अहंकार रूपी विकार के अंकुर को नष्ट करने के उद्देश्य से मायारूपी रमा राजकुमारी का प्रसंग रचा। नारदजी ने राजकुमारी से विवाह करना चाहा जबकि उनको अभिमान था काम पर विजय पाने का। भगवान से रूप माँगा तो भगवान ने परम हित करने का आश्वासन देकर उनको बन्दर का रूप दे दिया। क्रोधवश नारद जी ने भगवान को शाप दे डाला। ऐसा होता है माया का प्रभाव जिसके कारण नारद जैसे देवों के ऋषि को भी अहंकार ने ग्रस लिया। इसी माया के वशीभूत होकर भगवान का वाहन होकर भी गरुड़ जी को काकभुशुण्डि जी की शरण में जाना पड़ा था।

बहन कमला वर्मा जी

हमने अभी अध्यात्म में कदम रखा है। गुरुदेव भगवान की वाणी को समझने तथा जीवन में उतारने से ही हम इस मार्ग पर अग्रसर हो सकेंगे।

भगवान् ने गीता के अध्याय 17 में तप का महत्त्व बतलाया है। हमारे मार्ग में वाणी और विचारों का तप करना है। साधक अपनी वाणी और विचारों को ऐसा संयमित करने की चेष्टा करता है कि कार्य में शक्ति का अपव्यय तो होता ही नहीं है, बुरे संस्कार भी ग्रहण नहीं करता है।

वाणी का तप - सत्य वही बोलना चाहिये जो प्रिय हो और हितकर हो। हमारी वाणी में दूसरों को वेधने की क्षमता भी होती है जिसका उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय।

मन का तप - मन को अच्छे अच्छे भावों और विचारों से भरना चाहिए।

गीता के अध्याय 7 में भगवान् ने चार प्रकार के भक्त बतलाये हैं जिसमें से उन्होंने ज्ञानी भक्त ही सबसे

प्रिय बतलाये हैं क्योंकि ज्ञानी भक्त की मांगें नहीं होती हैं। ज्ञानियों में भी श्रद्धावान योगी सबसे अधिक प्रिय होते हैं, वे तो भगवान् की आत्मा ही हैं। कर्मियों से भी योगी श्रेष्ठ है। गीता के अध्याय 8 के श्लोक 28 में कहा गया है कि योगी पुरुष जो पुण्य फल वेदों के पढ़ने से तथा यज्ञ,तप और दान आदि से प्राप्त होता है उसका भी अतिक्रमण कर जाता है। योगी सभी तपस्वियों, ज्ञानियों और कर्मियों से भी श्रेष्ठ बताया गया है। निष्काम कर्म करने से योगी संसार से दूर होता जाता है, केवल भगवान् को पाने की कामना रह जाती है। वह सभी कर्मों को भगवान् के लिये भगवान् की शक्ति से करता है।

श्री विष्णु कुमार गोयल जी

गुरु वन्दना व सभी श्रोताओं का अभिनन्दन करने के उपरान्त श्री गोयल जी ने गीता के अध्याय 3 के श्लोक 9, 10 व 11 की ओर ध्यान आकर्षित किया जिनमें भगवान् ने यज्ञ का महत्त्व बताते हुए यज्ञ के निमित्त कर्म करने की आज्ञा दी है। यहाँ भगवान् ने समझाया है कि मनुष्य अपने कर्मों के कारण ही बन्धन में पड़ता है किन्तु यदि सभी कर्तव्य कर्म यज्ञ के निमित्त आसक्ति से रहित होकर किये जाएं तो कर्म बन्धन का कारण नहीं होते। वास्तव में सृष्टि कर्म रूपी यज्ञ से ही चलती है, इसीलिये प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में मानव तथा यज्ञ की रचना एक साथ करके मानव को आदेश दिया कि तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित भोग प्रदान करने वाला हो।

यज्ञ को साधारणत: होम के अर्थ में जाना जाता है। होम में अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है और उसमें जो समिधा अर्पित की जाती है उसके एक अंश की प्राप्ति देवताओं को होती है जिससे सन्तुष्ट होकर देवता लोग मनुष्यों को उनके इच्छित फल प्रदान करते हैं। सबके अपने अपने जो कर्तव्य कर्म होते हैं वे यज्ञ रूप होते हैं यदि वे त्याग की भावना से किये जाएं। यदि लोग अपने अपने कर्तव्य कर्म न करें तो सृष्टि चल ही नहीं सकती। कितने लोगों के सहयोग से एक भवन का निर्माण होता है। मिस्त्री से लेकर अनेक लोग योगदान करते हैं। जब हम भोजन करने बैठते हैं तो हम सोचते हैं कि बाज़ार से आटा, दाल, चावल इत्यादि ले आये तो बन गया भोजन लेकिन इसमें किसान व मजदूरों ने जो त्याग किया होगा हमें उनका आभार मानना चाहिए।

व्यष्टि समष्टि पर निर्भर है पूरी तरह से। यह यज्ञ (त्याग) निरन्तर चलता ही रहता है। जड़, वनस्पति, पशु, मनुष्य - सभी चाहे अनचाहे त्याग कर रहे हैं, एक दूसरे को सहयोग का आदान प्रदान करते हैं, वे सब स्वत: ही यज्ञ में आहुति दे रहे हैं। जैसे बच्चे के लिये माँ निष्काम भाव से त्याग करती है, पिता त्याग करते हैं, पति, पत्नी एक दूसरे के लिये त्याग करते हैं। हनुमान जी ने त्याग किया, लंका में गये किन्तु उनका सहयोग करने के लिये प्रकृति ने बलिदान किया। परमात्मा की शक्ति सृष्टि में व्याप्त है। हमारी साधना आत्मदान से शुरु होती है और आत्मदान (बलिदान) पर समाप्त होती है। कुछ हम करते हैं, कुछ प्रभु करा लेते हैं। जब हर व्यक्ति अपने अपने स्वधर्म का पालन करेगा तभी यज्ञ की गाड़ी सुचारु रूप से चलेगी। हमारी भावना यज्ञमयी हो जानी चाहिए। हम समाज के लिये यज्ञ करें। यही भगवान् का आदेश है।

अन्तिम सत्र में अध्यक्ष महोदय ने गुरुदेव भगवान् का धन्यवाद किया शिविर को निर्विघ्न सम्पन्न कराने के लिए। इसके उपरान्त शिविर को सुचारु रूप से संचालित करने के लिये जिस जिस साधक ने अपनी अपनी ड्यूटियाँ पूर्ण रूप से निभाई उन सब का नाम ले ले कर धन्यवाद किया।

12.2.2023 से 18.5.2023 तक के दानदाताओं की सूची

साधकगण अपने दान की राशि चैक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
BANK OF INDIA,
Haridwar
A/c No.: 721010110003147
I.F.S. Code: BKID0007210

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
HDFC BANK,
Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar
A/c No.: 50100537193693
I.F.S. Code: HDFC0005481

कृपा करके जमा करवाई हुई राशि का विवरण एवं अपना नाम और पता तथा PAN या आधार कार्ड नम्बर, पत्र अथवा फोन द्वारा साधना धाम कार्यालय में अवश्य सूचित करें। जिससे आपको रसीद आसानी से प्राप्त हो जायेगी।

– **रवि कान्त भण्डारी,** प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1.	सतकुमार कपूर, नई दिल्ली	1,00,000
2.	गुप्तदान	1,00,000
3.	रोली पाठक	51,000
4.	रीता शर्मा	51,000
5.	अरविन्द कुमार गुप्ता, फरीदाबाद	37,000
6.	अंजना मित्तल, दिल्ली	32,000
7.	हरिओम साधक ग्रुप, दिल्ली	31,000
8.	गिरीश मोहन, हरिद्वार	31,000
9.	मिलन शर्मा, दिल्ली	21,000
10.	सतीश खोसला, दिल्ली	21,000
11.	राघव वर्मा, दिल्ली	11,000
12.	रीता सिंह, कानपुर	11,000
13.	विजय कुमार कंसल, बरेली	11,000
14.	शुभ्रा शुक्ला, लखनऊ	11,000
15.	अशोक कुमार शर्मा, लखनऊ	10,100
16.	आशुतोष नागिया, लन्दन	10,000
17.	रेवा/राजिन्दर भाम्बरी, नोएडा	10,000
18.	राजेश कुमार यादव, अहमदाबाद	10,000
19.	सुधा सेखड़ी	10,000
20.	सतीश खोसला सत्संग समूह, दिल्ली	8,900
21.	मुम्बई सत्संग केन्द्र, मुम्बई	8,500
22.	विष्णु अग्रवाल, बरेली	6,001
23.	गुप्तदान	5,920
24.	गुप्तदान	5,810
25.	रेणु मेहता, दिल्ली	5,100
26.	अमित सुपुत्र मुन्ना लाल गुप्ता, नोएडा	5,100
27.	राम कृपाल कटियार, शाहजहाँपुर	5,100
28.	आविष्कार सपुत्र जेनी मेहरोत्रा, गुरुग्राम	5,100
29.	जेनी मेहरोत्रा, गुरुग्राम	5,100
30.	इशिका-कणव मित्तल, बरेली	5,100
31.	सुनीता गुप्ता, मुरादाबाद	5,100
32.	कृष्ण अवतार अग्रवाल, बीसलपुर	5,100
33.	राजीव रतन सिंह, हरदोई	5,100
34.	धवल नन्दराज जोग, दिल्ली	5,100
35.	प्रभाकर शुक्ला, ग्वालियर	5,100
36.	मंजू गुप्ता, देहरादून	5,100
37.	अनु-शैलेन्द्र घई, नई दिल्ली	5,100
38.	गुप्तदान	5,100
39.	चारू सुपुत्र अनिल बंसल, दिल्ली	5,100
40.	रविकान्त शुक्ला, देहरादून	5,100
41.	सुरेन्द्र-राधा अग्रवाल, बीसलपुर	5,000
42.	सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	5,000
43.	सतेन्द्र नेगी, हरिद्वार	5,000
44.	सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	5,000

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(12.2.2023 से 18.5.2023 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

45.	सन्दीप कुमार जायसवाल, कानपुर	5,000
46.	कमला सिंह (कानपुर सत्संग)	5,000
47.	हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5,000
48.	वैभव माहेश्वरी, मुम्बई	5,000
49.	गुप्तदान	5,000
50.	रविकान्त शुक्ला, देहरादून	5,000
51.	आदेश कुमार अग्रवाल, बरेली	4,000
52.	कमलेश गौर, कानपुर	4,000
53.	सुषमा-अशोक कुमार शर्मा, लखनऊ	3,601
54.	निर्मल जोशी, हल्द्वानी	3,500
55.	कृष्णा भण्डारी, गुरुग्राम	3,500
56.	संजीव नाथ अग्रवाल, बीसलपुर	3,500
57.	सतीश खोसला सत्संग समूह, दिल्ली	3,450
58.	चन्द्रभान गुप्ता, दिल्ली	3,400
59.	एस.एन. कालरा, कानपुर	3,100
60.	अभिषेक सुपुत्र घनश्याम, फरीदाबाद	3,100
61.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	3,100
62.	विष्णु कुमार अग्रवाल, बरेली	3,100
63.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	3,100
64.	रमन भण्डारी, अमृतसर	3,000
65.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2,500
66.	जे.के. चौधरी, काठगोदाम	2,500
67.	सुजाता गर्ग, दिल्ली	2,500
68.	अशोक कुमार शर्मा, लखनऊ	2,500
69.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2,500
70.	सत्यम सिंह, लखनऊ	2,500
71.	ज्ञानवती शुक्ला, कानपुर	2,500
72.	लक्ष्मी कान्त गुप्ता, मुम्बई	2,500
73.	सुनीता गुप्ता, मुरादाबाद	2,500
74.	दीपक कुमार अग्रवाल, पीलीभीत	2,500
75.	शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2,500
76.	मीना बिजलवान, हरिद्वार	2,500
77.	पीयूष, रुड़की	2,500
78.	भारती गुप्ता, गाजियाबाद	2,500
79.	सूरजभान सक्सेना, कानपुर	2,200
80.	दीपक सुपुत्र आनन्द शर्मा, ग्वालियर	2,100
81.	सुभाष सुपुत्र विष्णुदत्त शर्वपाल, हरिद्वार	2,100
82.	राजेश गुप्ता, दिल्ली	2,100
83.	इन्दु जौली, फरीदाबाद	2,100
84.	अपर्णा जौली, दिल्ली	2,100
85.	गिरीश चन्द्र अग्रवाल, पीलीभीत	2,100
86.	डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	2,100
87.	संजय कुमार पाण्डेय, बरेली	2,100
88.	निखिल अरोड़ा, चण्डीगढ़	2,100
89.	प्रतीक दीक्षित, नोएडा	2,100
90.	अनिरुद्ध-राखी अग्निहोत्री, रुड़की	2,100
91.	शिव कुमार जायसवाल, जोधपुर	2,100
92.	शशि बाजपेयी, कानपुर	2,100
93.	कमला सिंह, कानपुर	2,100
94.	सोमवती मिश्रा/गीता सिंह, कानपुर	2,100
95.	जगदीप नारायण तिवारी, कानपुर	2,100
96.	पुष्पा गौर, कानपुर	2,100
97.	दीपा शुक्ला, कानपुर	2,100
98.	शोभा गुप्ता, कानपुर	2,100
99.	प्रेमलता, कानपुर	2,100
100.	मंजू जायसवाल, कानपुर	2,100
101.	योगेश अग्रवाल	2,100
102.	चेतन भण्डारी, नई दिल्ली	2,100
103.	शशि मेहरा, नई दिल्ली	2,100
104.	राजेन्दर मल्होत्रा, दिल्ली	2,100
105.	मोहन लाल अग्रवाल, सिलीगुड़ी	2,100
106.	मधु गर्ग, हरिद्वार	2,100
107.	नीता सहगल, नई दिल्ली	2,100
106.	नीता सहगल, नई दिल्ली	2,100
107.	नीता सहगल, नई दिल्ली	2,100
108.	नवदीप सूद, होशियारपुर	2,100

शुभ समाचार

पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकम्पा से कानपुर की साधिका श्रीमती रीता सिंह के सुपुत्र श्री अभिषेक सिंह का शुभ विवाह दिनांक 2 मई, 2023 को होना निश्चित हुआ है, इसके उपलक्ष्य में साधिका श्रीमती रीता सिंह ने गुरु चरणों में रु. 11000/- की सेवा अर्पित की है। समस्त साधना परिवार की गुरुदेव महाराज से विनती है कि नव युगल के भावी जीवन पाठ को अपने शुभ आशीर्वाद से अलंकृत कर अनुग्रहीत करें व इस परिवार पर अपनी असीम कृपा सतत् बनाये रखें।

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि,

श्री राम बहादुर का 62 वर्ष की आयु में होली के दिन दिनांक 7 मार्च, 2023 को हरिद्वार में देहावसान हो गया। श्री राम बहादुर ने एक समर्पित सेवक के रूप में साधना धाम की लगभग 10 वर्ष तक सेवा की। श्री राम बहादुर जिनको प्रेम से बहादुर पुकारा जाता था, एक ऐसे कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे जो अपने मृदु स्वभाव के कारण साधना धाम आने वाले सभी साधकों के प्रेम पात्र बन गये थे। वे अस्वस्थता की अवस्था में भी धाम का सभी प्रकार का कार्य करने को तत्पर रहते थे। यही कारण था कि परिवार का पता न लगने की स्थिति में साधना परिवार के उपस्थित सदस्यों ने उचित सम्मान के साथ श्री बहादुर का मरणोपरान्त अन्तिम संस्कार किया तथा तेरहवीं के दिन दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये हवन आदि की क्रिया भी सम्पन्न की। ऐसे सेवक की क्षति दीर्घ काल तक साधना परिवार को खलेगी।

❖ ❖ ❖

कानपुर की अति वरिष्ठ साधिका श्रीमती मुनिया मिश्र का 76 वर्ष की आयु में कानपुर में देहावसान हो गया। वे कानपुर के दबोली केन्द्र की प्रमुख संचालिका थीं। वे यथासम्भव सभी साधना शिविरों में उपस्थित रहती थीं चाहे हरिद्वार हो या दिगोली अथवा बीसलपुर और सभी शिविरों में प्रवचन, भजन आदि में उनकी सक्रिय भागीदारी रहती थी। श्रद्धेय मथुरा भैय्या ने उन्हें गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी महाराज से जोड़ा था। यद्यपि उनको मातृत्व सुख की प्राप्ति नहीं हो पाई तथापि उन्होंने अपने देवर के पुत्र पुत्री के पालन पोषण की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। श्रीमती मुनिया मिश्र के निधन से साधना परिवार को भारी क्षति पहुँची है।

❖ ❖ ❖

समस्त साधना परिवार की पूज्य गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा इनके परिवारजनों को इनका वियोग सहने की यथायोग्य शक्ति प्रदान करें। साधना परिवार के सभी साधक भाई-बहन अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

बाल-साधना-शिविर-2023

शिविर स्थान : स्वामी रामानन्द साधना-धाम, संन्यास रोड, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
समय : 7 जून से 11 जून 2023 प्रातः तक

कुछ वर्षों से ग्रीष्मावकाश में बाल-साधना शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है बालकों का आध्यात्मिक, चारित्रिक एवं शारीरिक विकास करना। पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी की साधना पद्धति की सरल ढंग से जानकारी दी जायेगी एवं व्यावहारिक साधना के अन्तर्गत व्यावहारिक ज्ञान दिया जायेगा। शिविर में जाप का आवाहन, गीता पाठ, भजन एवं गोष्ठी का संचालन बालकों के द्वारा ही होगा अतः तैयारी करके आयें। प्रातः भ्रमण, खेल व योग के कार्यक्रम भी होंगे।

आवश्यक सामग्री : अपने पहनने के आवश्यक कपड़े, तौलिया, टूथपेस्ट व ब्रश, कंघा, साबुन, भ्रमण के लिये जूते, कापी, पैन एवं पेन्सिल।

बिस्तर एवं बर्तनों की व्यवस्था साधना-धाम की ओर से होगी।

कृपया अपने आने की सूचना 15 दिन पूर्व साधना-धाम में व्यवस्थापक महोदय को पत्र या फोन द्वारा अवश्य दें। (फोनः 01334-311821, मोबाइलः 08273494285)

प्रतियोगितायें

बच्चों को तीन ग्रुपों में बाँटा जायेगा।

1. पहला ग्रुप 7 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चे - शिक्षाप्रद कहानियाँ।
2. दूसरा ग्रुप 11 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे - सन्तों की कहानियाँ एवं संस्मरण।
3. तीसरा ग्रुप 15 वर्ष से 20 वर्ष के बालक व बालिकायें - दिये गये विषय पर सामूहिक चर्चा (Group Discussion)

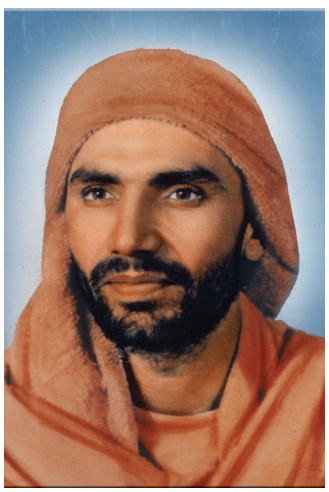

श्रीगुरु पूर्णिमा साधना शिविर-2023

(28 जून से 3 जुलाई 2023 तक)
शिविर स्थानः
स्वामी रामानन्द साधना धाम, संन्यास रोड, कनखल (उत्तराखण्ड)

28 जून 2023 को गुरु पूर्णिमा का शिविर आरम्भ होगा।

1 जुलाई की सन्ध्या से 3 जुलाई की प्रातः तक 36 घण्टे का अखण्ड जाप होगा। 3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा हर्षोल्लास के साथ मनाई जायेगी।

साधना परिवार की कार्यकारिणी की बैठक 30 जून 2023 को प्रातः 10:30 बजे धाम के कार्यालय में होगी।

साधना-शिविर में भाग लेने वाले साधक कृपया अपने आने की सूचना 15 दिन पूर्व मैनेजर साधना-धाम को टेलीफोन या पत्र द्वारा अवश्य देने का कष्ट करें।

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1.	अध्यात्म विकास	इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।
2.	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)	
3.	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)	
4.	Evolutionary Outlook on Life	
5.	Evolutionary Spiritualism	
6.	जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति	काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
7.	गीता विमर्श	श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम 7 अध्यायों की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
8.	व्यावहारिक साधना	पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों – (1) साधकों के लिये, (2) दम्पत्ति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन
9.	कैलाश-दर्शन	पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा का एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन
10.	गीतोपनिषद	श्रीमद्भगवद्गीता के आठ से अठारह अध्याय तक स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या
11.	हमारी साधना	श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित
12.	हमारी उपासना	
13.	साधना और व्यवहार	
14.	अशान्ति में	
15.	मेरे विचार	
16.	As I Understand	
17.	My Pilgrimage to Kailash	
18.	Sex and Spirituality	जीवन-रहस्य (प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकें)
19.	Our Worship	हमारी साधना
20.	Our Spiritual Sadhana Part-I	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
21.	Our Spiritual Sadhana Part-II	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
22.	स्वामी रामानन्द-एक आध्यात्मिक यात्रा	स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना
23.	पत्र-पीयूष	कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन
24.	स्वामी रामानन्द-चरित सुधा	स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवम् वैद्य श्री सत्यदेव
25.	स्वामी रामानन्द-वचनामृत	श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन
26.	मेरी दक्षिण भारत-यात्रा	पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन
27.	पत्तियाँ और फूल	भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन
28.	दैनिक आवाहन विधि	स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित – श्रीमती महेश प्रकाश
29.	Letters to Seekers	कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन
30.	आत्मा की ओर	
31.	जीवन विकास – एक दृष्टि	Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद
32.	विकासात्मक अध्यात्म	Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद
33.	गुरु के प्रति निष्ठा	तेजेन्द्र प्रताप सिंह
34.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 1)	अनाम साधिका
35.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 2)	
36.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 3)	
37.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 4)	
38.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 5)	
39.	श्रीराम भजन माला	श्री सूर्य प्रसाद शुक्ल 'राम सरन'
40.	माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद	मीरा गुप्ता
41.	पत्र-पीयूष सार	पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण
42.	गीता पाठ	
43.	गृहस्थ और साधना	
44.	प्रभु दर्शन	
45.	प्रभु प्रसाद मिले तो	
46.	गीता प्रवेशिका	हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण – रमेश चन्द्र गुप्त

दिगोली तपस्थली में दिनांक 14.3.2023 को भण्डारे का आनन्द उठाते हुए स्थानीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राएं

दिगोली तपस्थली में गीता प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत करती हुई वरिष्ठ साधिका नीता सहगल

दिगोली तपस्थली में गीता प्रतियोगिता का दृश्य

अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार गोयल द्वारा गीता प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण